शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

सम्पादक—
गायनाचार्य पण्डित शिवप्रसाद त्रिपाठी
प्र० अ० संगीत विद्यालय,
हि० वि० वि० काशी।

प्रकाशक—
शारदा संगीत भवन,
अस्सी, काशी।

प्रथम बार १०००] स० १९९१ वि० [मूल्य ३)

शिवसंगीत-प्रकाश

(ग्रन्थकर्ता)

पंडित शिवप्रसादजी त्रिपाठी

गायनाचार्य

प्रधानाध्यापक संगीत-विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ—६६६५

वक्तव्य

जयति स भगवान् कृष्णः शेते यः शेषभोगशय्यायाम् ।
मध्येपयः पयोधेरपर इवाम्भोनिधिः कृष्णः ॥

ललित कलाओं में सङ्गीत का सर्वोच्च स्थान है । इतना सौन्दर्य और इतना आकर्षण अन्य किसी कला में नहीं है । अप्सराएँ, गन्धर्व, और किन्नर यदि स्वर्ग में न होते तो स्वर्ग का इतना महत्व कदाचित् न होता । गोपियों को गृह एवं कुटुम्ब से विमुख कर निर्जन वन में खींच ले जाने की शक्ति मुरली की ही मधुर तान में थी । संतप्त हृदयों को सान्त्वना देना संगीत ही का काम है । रोते हुए अबोध बच्चे को हँसा देना संगीत के ही वश का है । संगीत ही तृणजीवी जंगली पशु को वश में कर सकता है । उल्वण विष उगलने वाले भयंकर सर्प को संगीत के अतिरिक्त और कौन हाथ में ला सकता है !

इन्हीं विशेषताओं के कारण सभी जातियों ने, सभी देशों न और सभी लोकों ने इस कला को अपनाया है । संगीत की ध्वनि पृथ्वी के कोने २ म सुनाई देती है । प्रत्येक माङ्गलिक कार्य का प्रारम्भ सङ्गीत ही से होता है । हरएक उत्सव में सङ्गीत का विशिष्ट स्थान होता है । सङ्गीतमय भजनों के द्वारा भगवत्प्राप्ति अनायास हो जाती है । भगवान् वहीं जाकर निवास करने लगते हैं जहां उनके भक्त उनके गुण गाते हैं भगवान् ने स्वयं कहा है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

परन्तु यह सङ्गीत शास्त्र बहुत ही दुरूह है। स्वर और ताल का ज्ञा साधारण बात नहीं इसका पारङ्गत होना तो असम्भव है परन्तु इसक साधारण ज्ञान भी सुखसाध्य नहीं। कुछ विद्वानों ने तो यहां तक क डाला है कि सरस्वती भी सङ्गीतसागर का अन्त नहीं पा सकीं —

नादाब्धेस्तुपरं पारं न जानाति सरस्वती।
अद्यापि मज्जनभयात् तुम्बीं वहति वक्षसि ॥

सङ्गीतशास्त्र का मर्म जानना कठिन है। निपुण गुरु और उत्तम ग्र के बिना इसका ज्ञान हो नहीं सकता। कुछ प्राचीन सङ्गीताचार्यों सङ्गीत रत्नाकर, सङ्गीत पारिजात, आदि सङ्गीत विषयक ग्रन्थों की रच की है परन्तु उनकी भाषा संस्कृत होने के कारण दुरूह है और विषय व प्रतिपादन पूर्ण एवं स्पष्ट रूप से नहीं किया गया है। उक्त ग्रन्थों प्रचलित संगीत के अभाव से संगीतजिज्ञासुओं का उनके अध्ययन मन नहीं लगता और वे सूरदास, तुलसीदास आदि महापुरुषों के सुन्द पदों को खोजते हैं।

इन्हीं आवश्यकताओं का अनुभव कर और कुछ सङ्गीतप्रेम मित्रों के अनवरत आग्रह से इस ग्रन्थ के प्रकाशन की ओर प्रवृत्ति हुई। इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल एवं मनोहर भाषा में विषय क प्रतिपादन किया गया है अतएव बिना अधिक प्रयास के ही सङ्गीत क प्रचुर ज्ञान हो सकता है। इसमें अकबर के समकालीन स्वामी हरिदास जी, तानसेन, बैजूबावरा, गोपाल नायक आदि प्राचीन संगीत परमाचार्य के गानों की स्वरलिपि यथावत् रूप से प्रतिपादित की गई है और इसके साथ साथ नवीन रुचि के अनुसार सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, गुरु नानक, मुंशी भृगुनाथ आदि क उत्तम पदों की स्वरलिपि प्राय सभी प्रचलित तालों में दी गई है। प्रत्येक राग के ध्यान, लक्षण, अलाप और तान के प्रतिपादन करने के कारण सगीत मर्म जिज्ञासुओं को एक ही स्थान में सब आवश्यक बातें मिल सकती हैं। यह शिवसंगीतप्रका

का प्रथम भाग है और इसमें केवल कल्याण ठाट से उत्पन्न होने वाले आठ रागो का प्रतिपादन किया गया है। यदि यह भाग उपयोगी और सफल होगा तो इसके और ६ भाग प्रकाशित किये जाएँगे।

इस अनन्त संगीत रत्नाकर का पार पाना तो वहुत ही कठिन हे, परन्तु जिन गुरुजनो की कृपा से कतिपय रत्न हाथ लग पाये हैं उनका में हृदय से कृतज्ञ हू। इन गुरुजनो में सवसे प्रथम स्थान मेरी प्रात स्मरणीया पूज्य माताजी का है। जव मैं अवोध वालक था और घर ही में खेला करता था उस समय मेरी माता जी अपने स्वभावमधुर कण्ठस्वर से सुन्दर गान गाया करती थीं। उनकी मनोहर कण्ठध्वनि का मेरे कोमल हृदयपटल पर इतना प्रभाव पडा कि मेरी सव-वृत्तिया संगीत की ही ओर प्रवृत्त हो गई।

मेरे ग्राम तिवारी पुर में चिरकाल से सङ्गीत का प्रवाह वहता आ रहा है और उस समय मेरे कुल पूज्य प० वेनी प्रसाद त्रिपाठी जी तथा प० अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी जी नारदीय सङ्गीत के अच्छे मर्मज्ञ वहा विद्यमान थे। उक्त महापुरुषों की संगति से सगीत में मेरा प्रेम और भी दृढ हो गया।

क्रमश ज्ञानपिपासा वढती गई और मेरी इस ओर अधिकाधिक प्रवृत्ति हो गई। मेरी इस लगन को देख संगीत के परमप्रेमी सुरतानपुर निवासी भृगु सगीतालय, कलकत्ता, के सस्थापक श्रीगुरुनारायण वर्मा जी कृपा कर मुझे कलकत्ता ले गए और वहा मेंने शास्त्रपद्धति के अनुसार सगीत की शिक्षा प्राप्त की।

भृगुसंगीतालय के अध्यक्ष संगीताचार्य संगीतशिरोमणि श्री मुंशी भृगुनाथ वर्माजी ने मुझे तानपूरे पर भली प्रकार स्वर साधन कराकर पद्धति से ध्रुपद सिखाए। आप ही ने मुझे मृदंग वादन की शिक्षा दी आपके ऋण से मैं कभी मुक्त नहीं हो सकता।

कलकत्तानिवासी पं० शंकर भट्ट जी, श्रीमोहनी बाबू और पं० विश्वनाथ भट्ट जी की कृपा से मुझे धम्मार और ध्रुपद की गायकी का और भी ज्ञान प्राप्त हुआ। हारमोनियम की गतों की शिक्षा के लिये मैं हैदराबाद निवासी सुप्रसिद्ध संगीताचार्य पं० श्री लक्ष्मणराव जी का हृदय से कृतज्ञ हूँ। आपकी उत्तम शिक्षा शैली से थोड़े ही समय में मुझे बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ।

बम्बईनिवासी संगीताचार्य पं० श्री विष्णुनारायण भातखण्डेजी को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। आपने मुझे सङ्गीत शास्त्र के मुख्य ग्रन्थों को पढ़ाया। आपकी असीम कृपा से मेरी आखें और भी खुल गई और रागों के लक्षण इत्यादि का विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ। आपने मुझे अपने गले से ध्रुपद के गायकी का और भी ज्ञान प्रदान किया उक्त गुरुजनों के चरण कमलों में मैं सादर प्रणामाञ्जलि समर्पण करता हूं।

अब मुझे उन प्रिय महानुभावों को धन्यवाद देना है जिनकी सतत प्रेरणा से यह कार्य हो सका है। शिवगढ़नरेश श्रीमान् राजा बरखण्डी महेश प्रताप नारायणसिंह जी ने इस पुस्तक के प्रकाशन में सब प्रकार की सहायता की है और आपही के उत्साह दिलाने से यह पुस्तक प्रकाशित हो पाई है। आप स्वयं संगीत के प्रेमी हैं और आपने बड़े परिश्रम से संगीत का अभ्यास कर प्रचुर ज्ञान प्राप्त किया है।

काशीस्थ अवसानगंज स्टेट के कुँवर श्रीमान् केदारनारायणसिंह जी महोदय ने इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी सहायता की है। उक्त कुँवर साहेब ने यदि अनवरत प्रोत्साहन न दिया होता तो कदाचित् यह पुस्तक आज से १० वर्ष पीछे निकलती। आपको गान विद्या से अत्यन्त प्रेम है, और आपके यहा प्राय संगीत की चर्चा होती ही रहती है।

गोरखपुर जिला के अन्तर्गत बरई पट्टी ग्राम के सुप्रसिद्ध रईस श्रीमान् पं० रामनरेश जी द्विवेदी ने इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहायता दी है अत उन्हें अनेक धन्यवाद है।

उक्त तीनों प्रिय सज्जनों को गुरु के नाते मैं हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ।

अन्त में करुणावरुणालय श्री जगदीश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे इसी प्रकार अपनी असीम अनुकम्पा बनाए रहें जिसमें इसके अवशिष्ट ६ भाग शीघ्र ही संगीतप्रेमियों की सेवा में उपस्थित हो सकें।

रामनवमी, सं० १९९१
शारदा संगीत भवन,
अस्सी, काशी।

निवेदक—
शिवप्रसाद त्रिपाठी

शुद्धि पत्र ।

अशुद्ध	शुद्ध	पृ० सं०	पंक्ति	कोष्ट
०	३	भ	२३	४
३	०	भ	२३	५
म	म —	६	१७	२
र	रं	२५	१	१
म	मं	३१	२	४
र	रि	४०	१०	१
	ऽ	४३	११	३
	सु	४४	११	४
दि	दी	५६		५
स	सं	६३	६	३
	म	७०	१४	३
	ऽ	७५	१८	२
र	रं	८७	१८	४
स	सं	९९	१७	४
	क	१०३	१०	३
स	स	१०५	५	२
स	सं	१०५	७	४

अशुद्ध	शुद्ध	पृ० सं०	पंक्ति	कोष्ट
म	माय	१०६	९	
	प	१०६	१३	४
म	मं	१०९	११	२
	प	११०	१	१
प	पृ	१११	११	५
का	को	१२६	५	५
स	सं	१२६	५	६
क	लि	१४५	२	१
	म	१५३	९	३
य	यो	१५४	१२	५
म	मं	१६२	३	३
म	मं	१७७	१५	६
म	मं	१७८	७	१
म	मं	१७९	९	४
म	मं	१८७	१३	२
ग	म	१८८	३	१
सं	संत	१९७	१२	४

श्रीमान् राजा चरखड़ी महेशप्रतापनारायणसिंहजू देव

(शिवगढ़-नरेश)

स्वराध्याय

संगीत में गायनोपयोगी मुख्य सात स्वर हैं जिनको षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद, कहते हैं और जो संक्षेप में सा रे ग म प ध नि कहलाते हैं। इन सातों स्वरों की उत्पत्ति इस प्रकार है -

षड्जं मयूरो वदति, ऋषभं चातको वदेत।
अजो वदति गांधारं क्रौंचः क्वणति मध्यमम्॥
निषाद बृंहते नागो धैवत दर्दुरो वदेत्।
ऋतौ वसंतसमये पिको वदति पंचमम्॥

अर्थात्--मोर, चातक, बकरा, क्रौंच, हाथी, मेंढक, और कोकिल ये क्रम से स र ग म न ध और प को बोलते हैं।

सप्तक—उपर्युक्त सातों स्वरों के क्रमबद्ध संग्रह को सप्तक कहते हैं। य सातों शुद्ध स्वर हैं। इनके अतिरिक्त पांच विकृत स्वर होते हैं- यथा ऋषभ, गांधार, धैवत, निषाद, ये कोमल होते हैं और मध्यम तीव्र होता है। इस प्रकार इन बारह स्वरों के समूह स एक सप्तक बनता है।

सप्तक-भेद—स्वरों के ऊँचे और नीचे नाद के क्रमानुसार सप्तकों के तीन भेद किये गये हैं। जो मन्द्र, मध्य, तार, नाम से प्रसिद्ध हैं।

थाट—सप्तक में वर्णन किये हुए बारह स्वरों से थाट की उत्पत्ति होती है। संस्कृत ग्रन्थकार उसे मेल कहते हैं। उसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है।

"मेलः स्वरसमूहः स्याद्रागव्यंजनशक्तिमान् ।"

अर्थात् स्वरों की ऐसी विशिष्ट रचना जिससे राग उत्पन्न हो स
उसे मेल अथवा थाट कहते हैं। थाट अनेक हो सकते हैं, परन्तु संगीत
शास्त्र में मुख्य दस ही थाट माने गये हैं। वे इस प्रकार हैं —

कल्याणमेलकस्त्वाद्यो विलावल्याः द्वितीयकः ।
खंमाजाख्यस्तृतीयः स्याद्भैरवश्च चतुर्थकः ॥
पंचमो भैरवीनामा षष्ठस्त्वासावरीरितः ।
सप्तमस्तोड़िकाद्योऽपि पूर्व्यभिधोऽष्टमः स्मृतः ॥
नवमो मारवाभिख्यो दशमः काफिसंज्ञितः ।
इत्येते दश मेलास्ते रागोत्पादनहेतवः ॥

इस पुस्तक में केवल कल्याण थाट से उत्पन्न होने वाले प्रचलित रा
दिये जाते हैं।

राग—योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रंजको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥

वर्ण—गानकी प्रत्यक्ष क्रियाको वर्ण कहते हैं। ये चार प्रकारके होते हैं
यथा स्थायी, आरोही अवरोही, संचारी ।

स्थायी—एक ही स्वरको बार बार कहनेको स्थायी कहते हैं।

आरोही—षड्ज स्वरसे ऊपर निषाद स्वर तक जानेको आरोही वर्ण
कहते हैं।

अवरोही—निषाद से नीचे षड्ज तक आने को अवरोही वर्ण कहते हैं

सञ्चारी—आरोह अवरोह दोनों के मिश्रण को सचारी वर्ण कहते हैं।

रागभेद—मुख्य तीन हैं, ओडव, षाडव और सम्पूर्ण। इसी को जाति भी कहते हैं।

ओड़व—जिस राग में पाँच स्वरों का उपयोग होता है, उसे आडव कहते हैं।

षाडव—जिस राग में छ स्वरों का उपयोग होता है उसे षाडव कहते हैं।

सम्पूर्ण—जिस राग में सातों स्वर लगते हैं, उसको सम्पूर्ण कहते हैं। राग में पाँच से कम स्वर सर्वमान्य नियम के विरुद्ध हैं, परन्तु कुछ सगीतज्ञ चार और तीन स्वर के राग भी बतलाते हैं।

अलंकार—वर्ण की नियमित रचना अथवा विशिष्ट स्वर समुदाय को अलकार कहते हैं। प्रचार में इसको पलटा कहते हैं। स्वर का शीघ्र ज्ञान होना व राग का विस्तार समझ में आना यही अलकार का मुख्य उद्देश है। अलकार में स्वरसख्या के लिये कोई भी नियम नहीं है।

वादिसम्वादिप्रकरण।

प्रतिरागे लक्षितव्याश्चतुर्विधाः स्वराः बुधैः।
वादिसम्वाद्यनुवादिविवादिनश्च नित्यशः॥
वादीस्वरस्त्वेक एव संवाद्यपि तथैव च।
शेषाणामनुवादित्व विवादी वर्जितस्वरः॥

प्रत्येक राग में वादी, सम्वादी, अनुवादी, विवादी, स्वर होते हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है।

वादी--राग में जो अधिक महत्व का स्वर होता है उसे वादी कहते हैं। इसका उपयोग राग में अधिक प्रमाण में होता है, अत इसे राग का राजा कहते हैं।

सम्वादी--यह वादी की अपेक्षा कम महत्व का होता है, किन्तु अन्य स्वरों से इसका महत्व अधिक है, इसे राग का मंत्री कहते हैं।

अनुवादी--वादी और सम्वादी को छोड़ कर बाद के नियमित स्वरों को अनुवादी कहते हैं, इसे राग का सेवक कहते हैं।

विवादी--जिस स्वर को राग में लगाने से राग भ्रष्ट हो जाता है, उसे विवादी कहते हैं। इसे राग का शत्रु कहते हैं। प्रचार में यह वर्ज्यस्वर कहलाता है।

गाने के अवयव।

गाने में चार अवयव होते हैं। स्थायी अन्तरा, संचारी और आभोग संस्कृत ग्रन्थकार इसे धातु कहते हैं।

स्थायी--गाने के प्रथम पद को स्थायी कहते हैं। इसमें राग का स्पष्ट रूप प्रगट हो जाता है, और इसमें तार सप्तक के स्वरों का उपयोग कम होता है।

अन्तरा--गाने के दूसरे पद को अन्तरा कहते हैं। यह पद स्थायी सप्तक के मध्य से प्रारम्भ होकर तार सप्तक के मध्य तक जाता है।

संचारी—गाने के तीसरे पद को संचारी कहते हैं। इस पद से स्थायी के ऊपर वाले भाग का विशेष बोध होता है।

आभोग—गाने के चौथे पद को आभोग कहते हैं। इसका रूप अन्तरे से कुछ भिन्न होता है।

किसी २ गाने में स्थायी, अन्तरा दोही होते हैं, और किसी २ में चारों होते हैं। प्राय ख्याल और टप्पे में दोही मिलते हैं किन्तु ध्रुपद में कहीं दो और कहीं चार पद होते हैं। दो पद का आधा और चार पद का सम्पूर्ण ध्रुपद माना जाता है।

पकड़—राग वाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

तालाध्याय।

मात्रा—गायन में समय मापने के प्रमाण को मात्रा कहते हैं।

लय—गायन में समय की गति को लय कहते हैं। यह तीन प्रकार की होती है। विलम्बित, मध्य, और द्रुत।

विलम्बित—बहुत धीमी चाल में गाने को विलम्बित कहते हैं। प्रचार में इसको थाह कहते हैं।

मध्य—विलम्बित की अपेक्षा डेवढ़ी चाल को मध्यलय कहते हैं।

द्रुत—विलम्बित की अपेक्षा द्विगुण चाल को द्रुतलय कहते हैं।

सांकेतिक चिन्ह।

इस पुस्तक में सा की जगह स, रे की जगह र और नि की जगह न रक्खा गया है।

मन्द्र—जिन स्वरों के नीचे बिन्दु दिये हों, उनको मन्द्र सप्तक का स्वर जानना चाहिये। जैसे, स़ ऱ ग़ म़ प़ ध़ ऩ।

मध्य—जिन स्वरो पर कोई चिन्ह न हो उनको मध्य सप्तक का स्वर जानना चाहिये। जैसे -स र ग म प ध न।

तार—जिन स्वरों के ऊपर बिन्दु हो उन्हें तार सप्तक का जानना चाहिये। जैसे - सं रं ग म पं ध नं

शुद्ध स्वर—जिन स्वरों पर कोई चिन्ह न हो उन्हे शुद्ध स्वर जानना चाहिये। जैसे - स र ग म प ध न।

कोमल स्वर—जिन स्वरों के नीचे पड़ी पाई हो उन्हें कोमल स्वर समझना चाहिये। जैसे - र॒ ग॒ ध॒ न॒।

तीव्र—जिस स्वर के ऊपर खड़ी पाई हो उसको तीव्र समझना चाहिये। जैसे - म॑, (ऐसा चिन्ह केवल म, ही पर मिलेगा)

एक मात्रा में स्वर—जिन स्वरों के नीचे चन्द्राकार चिन्ह हो उन्हें एक मात्रा में समझना चाहिये। जैसे - सर सरगम

आधी मात्रामें स्वर—जिन स्वरों के ऊपर चन्द्रबिन्दु हो उन्हे आधी मात्रा में समझना चाहिये जैसे पँधँमँ

मीड़—जिन स्वरों के ऊपर धनुष की तरह चिन्ह हो उनको एक स्वर से दूसरे स्वर तक मीड जानना चाहिये। जेसे स प, प सं

आकार स्वर—जिन स्वरों के आगे पडी पाई हो उन्हें उसी स्वर का आकार समझना चाहिये। जेसे – स स की जगह स – और प प प की जगह प – – इत्यादि। गाने में आकार का चिन्ह गुरु की तरह होता है उसका चिन्ह यों है ऽ

—►✻◄—

ताल सम्बन्धी चिन्ह

सम—जहाँ लय का झुकाव पडता हो उसे सम कहते हैं, यहाँ आम तौर पर मनुष्य का सिर हिल जाता है। इसका चिन्ह इस प्रकार है +

खाली—जहाँ पर शून्य दिया हो उसको खाली समझना चाहिये उसका चिन्ह इस प्रकार है। ०

ताली—जहाँ पर अङ्क लिखे हों उन्हें अङ्कानुसार ताल समझना चाहिये। जैसे २, ३, ४ इत्यादि। यह ध्यान रहे कि सम पहले ताल पर होता है।

ताल संयुक्त स्वर साधन।

(१) त्रिताल, १६ मात्रा।

ता०	+				२				०				३			
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ठ०	ना	धि	धि	ना	ना	धि	धि	ना	ना	तिं	ति	ना	ना	धि	धि	ना
स्व०	स	र	ग	म	प	ध	न	स	स	न	ध	प	म	ग	र	स

(२) चौताला, १२ मात्रा।

ता०	+		०		२		०		३		४	
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठ०	धा	धा	दि	न्ता	क	द्धागे	दि	न्ता	तेटे	कत	गदि	गन
स्व०	स	ग	र	म	ग	प	म	ध	प	न	ध	सं
	सं	ध	न	प	ध	म	प	ग	म	र	ग	स

(३) एकताला १२ मात्रा।

ता०	+		०		२		०		३		०	
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठ०	धी	धी	ना	धी	धी	ना	क	त्ता	गी	त्रिक	धी	ना
स्व०	सर	ग	रग	म	गम	प	मप	ध	पध	म	धन	सं
	सन	ध	नध	प	धप	म	पम	ग	मग	र	गर	स

(४) तेवड़ा ७ मात्रा ।

ता०	+			२		३		+			२		३		
मा०	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	
ठ०	धी	धी	ना	धा	त्रिक	धी	ना	धी	धी	ना	धी	त्रिक	धी	ना	ता०
स्व०	स	र	ग	स	र	ग	म	र	ग	म	र	ग	म	प	
	ग	म	प	ग	म	प	ध	म	प	ध	म	प	ध	न	
	प	ध	न	प	ध	न	सं	सं	न	ध	स	न	ध	प	
	न	ध	प	न	ध	प	म	ध	प	म	ध	प	म	ग	
	प	म	ग	प	म	ग	र	म	ग	र	म	ग	र	स	

(५) झपताल, १० मात्रा ।

ता०	+		२			०		३			
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
ठ०	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना	ता०
स्व०	स	र	स	र	ग	स	र	ग	म	प	
	र	ग	र	ग	म	र	ग	म	प	ध	
	ग	म	ग	म	प	ग	म	प	ध	न	
	म	प	म	प	ध	म	प	ध	न	स	
	स	न	सं	न	ध	सं	न	ध	प	म	
	न	ध	न	ध	प	न	ध	प	म	ग	
	ध	प	ध	प	म	ध	प	म	ग	र	
	प	म	प	म	ग	प	म	ग	र	स	

(६) सूल, १० मात्रा ।

ता०	+		०		२		०		३		
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	
ठ०	धी	धी	ना	धी	धी	ना	तू	ना	क	त्ता	ता०
स्व०	स	र	ग	र	स	र	स	र	ग	म	
	र	ग	म	ग	र	ग	र	ग	म	प	
	ग	म	प	म	ग	म	ग	म	प	ध	

म	प	ध	प	म	प	म	प	ध	न
प	ध	न	ध	प	ध	प	ध	न	सं
स	न	ध	न	सं	न	सं	न	ध	प
न	ध	प	ध	न	ध	न	ध	प	म
ध	प	म	प	ध	प	ध	प	म	ग
प	म	ग	म	प	म	प	म	ग	र
म	ग	र	ग	म	ग	म	ग	र	स

(७) धमार १४ मात्रा ।

ता०	+					२					३				
मा०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
ठ	क	त्त	ट	धे	टे	धा	ऽ	ग	दि	न	दि	न	ता	ऽ	ता०
स्व०	स	र	स	स	र	ग	र	स	र	ग	म	ग	र	स	
	र	ग	र	र	ग	म	ग	र	ग	म	प	म	ग	र	
	ग	म	ग	ग	ग	प	म	ग	म	प	ध	प	म	ग	
	म	प	म	म	प	ध	प	म	प	ध	न	ध	प	म	
	प	ध	प	प	ध	न	ध	प	ध	न	सं	न	ध	प	
	सं	न	स	म	न	ध	न	सं	न	ध	प	ध	न	सं	
	न	ध	न	न	ध	प	ध	न	ध	प	म	प	ध	न	
	ध	प	ध	ध	प	म	प	ध	प	म	ग	म	प	ध	
	प	म	प	प	म	ग	म	प	म	ग	र	ग	म	प	
	म	ग	म	म	ग	र	ग	म	ग	र	स	र	ग	म	

श्रीमान पं० रामनरेश जी त्रिपाठी, रईस (बरद पट्टी, जिला गोरखपुर)।

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

प्रथम किरण

राग—यमनकल्याण

ध्यान

शुभवाक्‌चन्द्रवदना पुलकांकितसुस्तनी।
नीलोत्पलकरा श्यामा कल्याणी मृगवाहिनी॥

—संगीत दर्पण

लक्षण

कल्याणो यमनो विभाति सकलैस्तीव्रस्वरैर्मंडितो।
गांधार कथितोऽत्र वादिथ च सवादी निषाद स्वर॥
शेषा स्युस्त्वनुवादिन क्वचिदिह स्यान्मध्यम कोमलो।
गेयो रात्रिमुखे मनीषिभिरसौ संपूर्ण रागाग्रणी॥

—राग कल्पद्रुमांकुर

यत्रसर्वेस्वरास्तीव्रा वादिसंवादिनी गनी।
निशामुखे तु यमन क्वचित्कोमल मध्यम ॥

—राग चन्द्रिका।

सबही तीवर सुर जहाँ, वादि गन्धार सुहाय।
अरु संवादि निषाद तें, ईमन राग कहाय॥

—राग चन्द्रिका-सार

नोट—यमन राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। यह राग सम्पूर्ण है। इसमें मध्यम स्वर तीव्र और शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं। इस राग में गांधार वादी और निषाद संवादी है। रात्रि के प्रथम प्रहर में यह राग गाया जाता है। यमन राग में कहीं कहीं शुद्ध मध्यम का प्रयोग करने से कुछ विद्वान् लोग उसे यमन कल्याण कहते हैं।

आरोह-अवरोह

स, र, ग, म, प, ध, न, सं—सं, न, ध, प, मं, ग, र, स

पकड़

नुरग, पमग, रस,

अलाप

(१) ग, र, स, नर, स, न, रग, रग, मंग, प, मंग, रग, र, नर स।

(२) नरग, रस, स, नध ध, प, पधन, धन र, नर, मरग, गर, स।

(३) सग, रग मग, पमग, ग, पमग, नध, पमग, स, नध, पमग, ग, पमग, रग प, र, स, नृर, स ।

(४) सरस, सरगरस, सरगमगरस, सरगमपमगरस, सरगमपधपम गरस, सरगमपधनधपमगरस, सरगमपधनस नधपमगरस ।

(५) स, नृ, ध प, न, ध, प, न, ध, न, र, ग, र, गमपमग, र, पमग, र, ग, र, नर, ग, र, नरस ।

(६) सरगमप, गमप, मप, धप, नध, प, सं, न, ध, प, नध, प, मध, प, म, ग, र, गमपमग, र, ग र, नर, स ।

(७) स, रग, प, म, ग, र, गमपधनधपम धपमग पमगर, प, र, स ।

(८) गग, पधप, सं, स, नरस, नरंगंरस, र्स, नध प, मप नध, प, सं, नध प रस, नध, प, मप, नधप, मपधप, मग, र, गमपधनध, प, मग र, पमग, र, ग ,र, नर, स ।

* मंगलाचरण *

राग - यमनकल्याण – त्रिताल

य ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुत स्तुन्वन्ति दिव्यै स्तवै ।
वेदै साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति य सामगा ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्त न विदु सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम ॥

स्थायी

\+ २ ० ३

| स – ग र | म – र स | ध़ – स
| यं ऽ ब्र ऽ | ह्मा ऽ व रु | णे ऽ न्द्र

पध प मं ग | र ग धन रेसं | नध मं ध प | मंग ग मं
ऽ द्र म रु | त ऽ स्तु ऽ | न्व ऽ न्ति दि | ऽ व्यै: ऽ

प – – – | प – मं ग | ग – र ग न – र
वै ऽ ऽ ऽ | वें ऽ दैः ऽ | सा ऽ ङ्ग प द ऽ क्र म

न र ग म | स – ध़ – | न – र ग मं ग –
ऽ प नि ष | दै ऽ र्गा ऽ | य ऽ न्ति यं ऽ सा ऽ

प – – –
गाः ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

+				२				०				३			
				प	–	ग	–	प	–	ध	प	धन	सं	सं	सं
				ध्या	ऽ	ना	ऽ	व	ऽ	स्थि	त	त	ऽ	द्ग	ते
–	सं	ध	रं	सं	–	सं	–	गं	रं	गं	ध	न	ध	न	र
ऽ	न	म	न	सा	ऽ	प	ऽ	श्य	ऽ	न्ति	यं	ऽ	यो	ऽ	गि
स	न	ध	प	प	–	न	ध	प	म॑	ग	ध	प	म॑	ग	प
नो	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ	स्या	ऽ	न्तं	ऽ	न	वि	दुः	ऽ	सु	रा
म॑	ग	र	ग	स	–	स	ऩ	ध	ऩ	र	ग	म॑	ग	म॑	ध
ऽ	सु	र	ग	णाः	ऽ	दे	ऽ	वा	ऽ	य	त	ऽ	स्मैः	ऽ	न
प	–	–	–												
मः	ऽ	ऽ	ऽ												

राग-यमनकल्याण-चौताला ।

लक्षणगीत

ऐ मन कल्याण सुगम रागनिसी पूरन सुर तीवर जामें।
गावादी सुर नी समवादी मेल कल्याणी शास्त्र बखानत।

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
								[मं]प	[ग]न	ध	र
								ते	ऽ	म	न
[मं]प	[ध]म	ग	र	ग	र	ग	म	ग	र	म	स
क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	सु	ग	म	रा	ऽ	ग	नि
[ग]स	र	स	–	[म]स	[ग]रग	स	म	[प]ग	–	प	ध
सा	ऽ	पू	ऽ	र	न	सु	र	ती	ऽ	व	र
[ध]स	–	न	–	ध	–	प	–				
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ				

अन्तरा

	०		२		०		३		४		
ग	-	ग	-	प	-	ध	प	सं	—	सं	सं
गा	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	सु	र	नी	ऽ	स	म
सं	रं	सं	-	न	ध	ध	ध	सं	—	सं	-
वा	ऽ	दी	ऽ	मे	ऽ	ल	क	ल्या	ऽ	णी	ऽ
स	र	गं	रं	मं	न	ध	प	प	-	म	-
श्य	ऽ	स्त्र	व	खा	ऽ	न	त				
ग	-	र	-	ग	-	र	-	स	र	स	-
स	र	स	-	ग	र	म	-	ग	ग	प	ध
सं	-	न	-	ध	-	प	-				

राग-शामकल्याण

त्रिताल।

प्रभु के चरण शरण की आसा।
जिनके छिन भर ध्यान धरे ते होत करोड़ विघ्न कर नासा॥
जिनके भजन प्रताप प्रबल ते हो गये तुलसी तुलसी दासा।
सूर कबीर भृगु केते अस भज भज किये राम उर वासा॥

—भृगुना

स्थायी

+				२				०				३			
				गग	ग	गम	गम	रग	सर	स	—	सध	स	रग
				प्रभु	के	ऽ	च	र	ण	श	ऽ	रण	को	ऽ
ध	नि	पध	प	—										
आ	ऽ	सा	ऽ	ऽ										

अन्तरा

+				२				०				३			
				गग	पध	पध	सं	सर	सन	सं	-	सर	नस	रन	
				जिन	के	ऽ	छि	न	भ	र	ऽ	ध्या	न	ध	
पध	रस	नध	प	-	सर	नस	गर	सन	धन	ध	प	-	ग	प	ध
रे	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ह्रो	त	क	रो	ऽ	ड	वि	ऽ	प्र	क	र
सन	धन	ध	प	-											
ना	ऽ	सा	ऽ	ऽ											

नोट—शेषपद अन्तरानुसार।

राग—यमनकल्याण।

त्रिताल—विलंबित

जाऊँ कहाँ तजि चरण तिहारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे।
कौने देव बराय विरदहित, हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पषाण, विटप जड, यवन कवन सुर तारे॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब माया विवस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे॥
—तुलसीदास।

स्थायी

+	२	०	३
	ध प मं	ग – गर गम	गर सस र ग
	जा ऊं क	हा ऽ त जि	ऽ नर ए ति
ध – पध मंप	ग गमं पध नध	मंप ग प ध	पध नर स स
हा ऽ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ का कों ऽ	ना ऽ म प
सं संसं न ध	पध नध पमं प	– सर स न	ध न प ध
ऽ तिन पा ऽ	व न ज ग	ऽ ऐहिं अ ति	दी ऽ न पि
पध नसं नध पमं	रेग		
या ऽ रे ऽ	ऽ		

अन्तरा

+	२	०	३
	पध नसं रसं	नध प – प	प – प प
	ऽ ऽ ऽ	ऽ कौ ऽ ने	दे ऽ व य

प ग – प ध	न न ध प	ध प – पध	प म
रा ऽ य वि	र द हि त	ऽ हुठि	ह ठि
			प ग रे ग ग
			अ ध म उ

ध प म ग र	म र ग र स स	– गग	म प ध
धा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ	ऽ खग	मृ ग
			र पध नसं सं सं
			क्या ऽ ध प

– स न ध	न नस नध पमं प	– सर	स सं न
ऽ पा ण वि	ट प ज ड़	ऽ यव	न क
			न न ध न प ध
			व़ न सु र

नस नध पमं गर	ग
ता ऽ रे ऽ	ऽ

नोट—शेष पद पूर्वानुसार।

राग–यमनकल्याण।

त्रिताल-मध्यलय

रामकृष्ण वासुदेव हरे हरे करो मन।
केशव यादवजा वसी वसुदेव के नन्दन कर मुरलीधर॥
माधव दीनबन्धु करुणामय मायापति गोविन्द मननाशिक।
हितपरमानन्द परमेश्वर मम जयजगवन्दन गोवर्धन धर॥

राग—यमनकल्याण

झपताल

प्रवलही श्याम अव दुर्वलहि देखि जन, झटहि पट झपटकर गज बचाया
गोपहीं ग्वाल को राखि लियो गिरिधर, इन्द्र को मान छिन में घटाया
नरहरि रूप धरि परहि सब परिहरे, दास प्रहलाद पर यों नमाया
चमर्हीदास हरि प्रेम के बस भय गोपी घर चोर के दूध पायो।

—चमरदास।

स्थायी

+		२			०		३		
प	पन	ध	पम	गम	प	—	म	ग	ग
प्र	व	ल	हीं	ऽ	श्या	ऽ	म	अ	व
ग	र	ग	प	प	र	ग	र	स	म
दु	ऽ	र्व	ल	हि	दे	ऽ	खि	ज	न
नृ	र	र	ग	ग	म	ग	प	ध	प
झ	ट	हि	प	ट	झ	प	ट	क	र

न	न	रं	गं	रं	न	रं	सन	धप	गम
ग	ज	व	चा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		२			०		३		
प	ग	प	ध	प	सं	–	म	सं	रं
गो	ऽ	प	हीं	ऽ	ग्वा	ऽ	ल	को	ऽ
न	न	नम	ध	न	स	धन	ध	पम	प
रा	ऽ	खि	लि	यो	गि	रि	ध	र	ऽ
म	म	म	ग	म	प	प	धन	पम	प
इं	ऽ	न्द्र	को	ऽ	मा	ऽ	न	छि	न
न	न	रं	गं	रं	न	रं	सन	धप	गम
में	ऽ	घ	टा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

सचारी

+		२			०		३		
स	स	म	मग	म	प	प	पम	प	
न	र	ह	री	ऽ	ह	ऽ	प	ध	
म	म	ध	न	न	स	स	नध	न	
व	र	हिं	स	व	प	रि	ह	रे	ऽ
प	प	प	मग	म	प	प	गग	ग	म
दा	ऽ	स	प्र	ह	ला	ऽ	द	प	र
न	न	र	ग	म	गम	पध	पन	प	प
पाँ	ऽ	न	मा	ऽ	पो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

आभोग

+		२			०		३		
प	ग	प	ध	प	स	स	र	स	न
च	ऽ	फ़	हीं	ऽ	दा	ऽ	म	ह	रि

न	–	रं	^म॑ गं	रं	सं	रं	संन	धन	प	
प्रे	ऽ	म	के	ऽ	व	स	भ	ये	ऽ	
^ध प	प	प	म॑ग	म॑	^न ध	न	म॑ध	प	प	
गो	ऽ	पि	घ	र	चो	ऽ	र	के	ऽ	
^ध म॑	ध	न	^ग रं	गं	^स न	^गं रं	सन	धप	गम॑	
दृ	ऽ	ध	पा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

राग–यमनकल्याण

स्थूल

दीनों के बन्धु दयाल मोचो दुःख तत काल,
अविनाशी नन्दलाल वेदन में गाये हैं।
गावत हैं नति नेति अतीत कह पुकारें वेद,
शेष के सहस्र मुख पार नहिं पाये हैं॥

स्थायी

+		०		२		३		०	
म	(ग)र	(र)स	(मं)प	प	(प)म	ग	मं	गर	र
दी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ	फे	ऽ
र	गर	ग	मं	धप	प	म	(ग)र	ग	र
ब	ऽ	न्धु	द	या	ऽ	ल	मो	ऽ	चो
(स)ऩ	र	(मं)ग	र	सँरसँ	(म)न	(स)ऩ	ध	(प)म	ध़
दुः	ख	त	ऽ	त	का	ऽ	ल	अ	वि
(म)ऩ	र	स	र	(मं)ग	प	(ग)र	ग	(प)म	ध
ना	ऽ	शी	ऽ	न	ऽ	न्द	ला	ऽ	ल
(म)न	ध	(ध)प	मं	(मं)ग	(मं)ग	ग	(ध)प	ग	र
चे	ऽ	द	न	में	गा	ऽ	ये	हैं	ऽ

अन्तरा

+		०		२		३		०	
ध प	ध प	म ग	प	गर	र	र	रग	म ग	गम
गा	ऽ	व	त	है	ऽ	ने	ऽ	ति	ने
ध	प	ध	र सं	सं	सं	सं	र सं	सन	गं रं
ऽ	ति	अ	ती	त	क	इ	पु	का	ऽ
रं मं	र स	म ग	ग	र	स	रं	सं	स न	सं न
रे	ऽ	वे	ऽ	द	शे	ऽ	ष	के	ऽ
ध	न ध	ध प	न	नध	पम	ग ध	प	म	ग
स	इ	स	मु	ख	पा	ऽ	र	न	हि
ग र	ग	ध प	ध	न	ध	म प	म	गर	र
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	है	ऽ

राग–यमनकल्याण ।

तेवड़ा

कौन तप तू कियो बंशी ।
रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधर को रस पियो बंशी ॥
श्याम सुन्दर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो बंशी ।
सूर श्रीगोपाल बस भये जगत में यश लियो बंशी ॥

—सूरदास ।

स्थायी

^	२	३	+	२	३
ग – ध	प मं	ग र	प ग ग	र ग	स र
कौ ऽ न	त प	तू ऽ	कि यो ऽ	बं ऽ	शी ऽ
ग प प	ध ध	ध प	सं सं म	सं रं	स –
र ह त	गि रि	ध र	मु ख हिं	ला ऽ	गी ऽ
सं गं रं	स न	ध न	ध प मं	ग र	स –
अ ध र	को ऽ	र स	पि यो ऽ	बं ऽ	शी ऽ

अन्तरा

+			२		३		+			२		३	
ग	प	प	प	—	प	प	ग (प)	प	ध	न (स)	ध	प	प
श्या	ऽ	म	सुं	ऽ	द	र	क	म	ल	लो	ऽ	च	न
प	—	मं	ग (प)	र	ग	ग	स	ऩ	ध़	ग (मं)	र	स	—
तो	—	हिं	त	न	म	न	दि	यो	ऽ	वं	ऽ	शी	ऽ
प	प	ग (प)	प (ध)	—	ध	प	सं (र)	—	रं	गं (मं)	रं	सं	सं
सु	ऽ	र	श्री	ऽ	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	व	स	भ	ये
रं	सं	न	ध	प	ध (मं)	न	प (ध)	मं	ग	र (ग)	ग	स (र)	र
ज	ग	त	में	ऽ	य	श	लि	यो	ऽ	वं	ऽ	शी	ऽ

राग-यमनकल्याण ।

चौताला

वंदौं मंगल प्रचार विघ्न हरन जगतसार,
सीय राम चरन कमल अनुपम सुखमा निधान ।
वंदौं अंजनी कुमार हरिजन दुख हरन हार,
शंकर सुत वायुतनय तेज पुञ्ज हनूमान ।
वन्दौं जन तुलसिदास भाषा प्रभु सुयशभाष,
रामायण अति सुपास भक्तन शुभगति प्रदान ।
वंदौं गुरु पिता मात सविनय भृगु जगत तात,
पुनि पुनि युगपाणि जोरि सबहीं हरिभक्त जान ॥

—भृगुनाथ ।

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
मं						प	ध		गं		
प	न	ध	प	मंग	मं	प	प	मं	ग	—	ग
व	ऽ	दौं	ऽ	म	ऽ	ग	ल	प्र	चा	ऽ	र
मं					प				म		
ग	र	ग	मं	प	प	र	ग	र	नृ	र	म
वी	ऽ	घ्न	ह	र	न	ज	ऽ	ग	सा	ऽ	र

र		ग			म			ध		ध	
स	-	र	र	ग	ग	मं	ग	प	मं	ध	प
सी	ऽ	य	रा	ऽ	म	च	र	न	क	म	ल

ध	ध		न			र	रं		मं		
प	प	ध	ध	न	न	सं	-	नध	न	ध	प
अ	नु	प	म	सु	ख	मा	ऽ	नि	धा	ऽ	न

अन्तरा

+		२		२		०		३		४	
र	मं	ध		न					र		
प	ग	प	-	ध	प	स	-	स	स	-	सं
धं	ऽ	दौं	ऽ	अ	ज	नी	ऽ	कु	मा	ऽ	र

र		रं	गं	मं			र		सं		
स	ध	सं	रं	ग	रं	स	स	नध	न	ध	प
ह	रि	ज	न	दु	ख	ह	र	न	हा	ऽ	र

र		सं		म		मं			मं	मं	मं
म	-	न	ध	न	ध	प	मं	ग	ग	ग	ग
शं	ऽ	क	र	सु	त	वा	ऽ	सु	त	न	य

ग	र	(मं) ग	प	ध	प	(ग) रं	ग	र	(म) ऩ	र	स
ते	ऽ	ज	पुं	ऽ	ज	ग	नू	ऽ	मा	ऽ	न

संचारी

+		०		२		०		३		४	
(र) स	—	(ध) प	मं	मंग	मं	(ध) प	प	मंग	प	—	प
व	ऽ	दौं	ऽ	ज	न	तु	ल	सि	दा	ऽ	स
(प) म	(प) म	(म) ध	ध	(सं) न	(सं) न	(र) मं	(र) स	नध	(सं) न	ध	प
भा	ऽ	पा	ऽ	प्र	भु	सु	य	श	भा	ऽ	य
(ध) प	(ध) —	मं	—	(मं) ग	ग	(प) प	र	ग	र	स	स
रा	ऽ	मा	ऽ	य	ए	अ	ति	सु	पा	ऽ	स
(र) स	—	र	र	(मं) ग	ग	(प) म	(मं) ग	प	प	(म) ध	प
भ	ऽ	क्त	न	शु	भ	ग	ति	प्र	दा	ऽ	न

आभोग

+		०		२		०		३		४	
(ध) प	(मं) ग	(ध) प	—	ध	प	(र) सं	सं	—	(र) सं	—	म
य	ऽ	दौं	ऽ	गु	रु	पि	ता	ऽ	मा	ऽ	त

र सं	सं	गं रं	रं	मं गं	रं	र सं	—	नध	सं न	ध	प
स	वि	न	य	भृ	गु	ज	ऽ	क्त	ता	ऽ	त

रं सं	र सं	न	ध	स न	ध	ध प	म	म ग	म ग	—	ग
पु	नि	पु	नि	जु	ग	पा	ऽ	णि	जो	ऽ	रि

म ग	ग र	म ग	—	म ध	ध प	ग र	ग	र	स न	र	स
म	व	हीं	ऽ	ह	रि	भ	ऽ	क्त	जा	ऽ	न

राग–यमनकल्याण।

चौताला

तेरोहि ध्यान धरत ब्रह्मा शिव व्यास बाल नारद मुनि सनकादि शेष सुरेश सुक रटत रहत निशि बासर। चन्द्र सूर्य और तारा गण भुवा मेरु पवन पानि पशुपक्षि जल स्थल के घन दामिनि और नारिनर। दीन बन्धु दीनानाथ दीन के दयाल प्रभु भरण पोषण बिश्वम्भर सचित अर्चित सर्वधर। गोपाल के प्रभु माधव मधुसूदन तुहीं राम तुहीं कृष्ण तुहीं करता सर्व ऊपर।

स्थायी

+		०		२		०		३		४	-
ध प	—	मग	प म	ग	प	ध प	—	प	प	सं न	ध
ते	ऽ	ऽ	रो	ऽ	हि	ध्या	ऽ	न	ध	र	त

न | ध | प ❘ | ध ग | | ग
ध — | प प | म ग | प र | र र | — र
त्र ऽ | म्मा ऽ | शि व | व्या ऽ | स वा | ऽ ल

र र | न | | | ग |
स स | ऩ ध़ | ऩ प़ | स सन | र सन | र स
ना र | द मु | ऽ नि | म न | ऽ का | ऽ दि

र | | | मं | प ध |
स र | — र | — स | ग — | गर म | प —
शे ऽ | ऽ प | ऽ सु | रे ऽ | श सु | क ऽ

ध | न ध | प प | ध | ग मं | स ग
प न | ध प | म ग | ग प | गर ग | ऩ र
र ट | त र | ह त | नि शि | या ऽ | स र

अन्तरा

\+ ० २ ० ३ ४

| ध | | | र |
पमं ध | प सं | स सं | सं सं | स सं | सं सं
ध ऽ | न्द्र सू | र ज | औ र | ता रा | ग ण

गं | | | र | मं न |
संन र | — संन | र सं | सं सं | नध न | ध प
मु वा | ऽ मे | ऽ रु | प व | न पा | ऽ नि

ध | न | | सं | |
प न | ध सं | — सं | सं न | ध न | ध प
प शू | ऽ प | ऽ द्वि | ज ल | ऽ स्थ | ल के

ध			म	ध							ग
प	मं	गर	ग	प	पमं	ध	धप	न	नध	सं	रं
ध	न	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मि	नि
म					ध	ध		म			
गं	रं	सं	नप	ध	प	प	पर	ग	गर	ग	मं
औ	ऽ	र	ना	ऽ	रि	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

संचारी

+		०		२		०		३		४	
ध	प,	प				ध		ध			
प	म	ग	प	—	प	प	—	प	प	—	प
दी	ऽ	न	ब	ऽ	न्धु	दी	ऽ	ना	ना	ऽ	ध
ध,			म		सं	प,		ध		ध,	
म	ध	ध	ध	—	न	म	ध	प	प	म	ग
दी	ऽ	न	के	ऽ	द	या	ऽ	ल	प्र	भू	ऽ
		प,	प			मं		ग			
प	प	म	ग	ग	ग	ग	—	र	—	स	स
भ	र	ण	पो	ष	ण	वी	ऽ	श्व	ऽ	म्भ	र
र	ग		स			प		ध	प,		
न	र	र	ऩ	र	र	प	—	प	म	ग	ग
स	चि	त	अ	चिं	त	स	ऽ	र्वे	ध	ऽ	र

राग-यमनकल्याण ।

धमार

शुलिन शम्भो खन्ड परशो पुरुषोत्तम विश्वम्भर विभु, तुहिं महेश तुहिं सुरेश तुहिं त्रिदेव विश्व के पिता । कंसारि कृष्ण नाम जानकी पति राम नारद की तुहिं तान-शारद का तुहिं प्राण-सत रज तम जव गुण ये तीन तव अधीन सम सव बन कर रहत प्रलय भर अलग अलग सव इस अवसर पर इनका मेल नहिं है खेल है प्रभो ! नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥

स्थायी

+			०		२		०			३		०	
प	ग	र	ग	र	स	–	स	ध़	ऩ	र	ग	प	ग
शु	लि	न	श	ऽ	म्भो	ऽ	ख	ऽ	न्ड	प	र	शो	ऽ
ऩ	र	नुरगम	पध	प	ग	र	ग	ऩ	र	ग	र	सन	रस
पु	रु	षो	ऽ	त्त	म	ऽ	वि	श्व	ऽ	भ	र	वि	भु
ध	ऩ	ध	ग	–	ग	र	ग	र	मं	ऽ	मं	गमं	मंध
तु	हिं	म	हे	ऽ	श	तु	हिं	सु	रे	ऽ	श	तु	हिं
धन	पमं	धप	प	न	ध	न	पमं	धप	प	रेग	पमं	गर	स
त्रि	दे	ऽ	व	वि	ऽ	श्व	के	ऽ	पि	ता	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+			०		२		०			३		०	
ग	र	गमंपध	नर्सं	न	पमं	पध	मंप	ग	पमं	गमं	धन	प	ग
कं	ऽ	सा	ऽ	री	कृ	ऽ	ष्ण	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	म
न	–	न	गपधन	सं	न	प	मंग	ग	मं	ध	मं	न	–
जा	ऽ	न	कि	ऽ	प	ति	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
मं	–	मं	मं	गमं	मंध	धन	पमं	प	पमं	गमं	रग	मंध	प
ना	ऽ	र	द	की	ऽ	तु	ही	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	न
सन	धन	रग	गमं	गध	पमं	गमं	धन	रंसं	नध	पमं	धप	मंग	रस
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	–	र	ग	–	ऩ	–	र	ग	–	ध	–	ऩ	–
र	ग	–	मं	प	ध	प	मं	ग	–	न	न	ध	मं
–	ध	न	–	मं	ध	न	मं	–	ध	–	मं	न	–
मं	ध	न	र	स	न	ध	प	मं	ध	प	मं	तर	गमं
प	–	ग	र	ग	–	गर	ग	ऩ	र	ग	प	ध	न
शा	ऽ	र	द	का	ऽ	तु	हीं	प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ण

नन	रर	नम	रर	नर	नर	-र	नर	नग	-ग	सन	सर	सन	सम
शत	रज	तम	जव	गुण	येती	ऽन	तज	अधि	ऽन	सम	सव	चन	कर
पमं	-ध	पमं	गग	पमं	-ध	पमं	गग	मंमं	धध	मंमं	धध	मंध	मंध
रह	तम	लय	भर	अल	गश्र	लग	सव	इस	अध	सर	पर	इन	कामे
-ध	मंज	मंन	-न	मं	धन	-स	नरं	सं	पमं	धप	-स	नरे	स
ऽल	नहीं	हैखे	ऽल	हे	प्रमो	ऽन	म	स्ते	नम	ऽस्ते	ऽन	म	स्वे

राग-यमनकल्याण ।

धमार

केशर घोर के अग लगाऊं अब तुम लाल कहा जैहो भाज।
बहुत दिन कीनो अधिकाई ताको फल सब पैहो आज॥

स्थायी

+					२					३			
मं					ध					ग		र	
न	ध	प	प	प	म	प	मं	ग	—	र	ग	ग	प
के	ऽ	ऽ	श	र	घो	ऽ	र	के	ऽ	अ	ऽ	ग	ल
ग					मं								
र	ग	—	र	स	ग	ग	स	न	—	न्	—	र	ग
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	अ	ब	तु	म	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ल

ग ᳓ मं प	म	
प म ग ग मं	ध न स न ध	प मं ग ५
क हा ऽ जै ऽ	ऽ ऽ ऽ हो ऽ	भा ऽ ऽ ज

अन्तरा

+	२	३
		र
	र ग प प नध	सं स – स
	ब हु त दि न	ऽ की ऽ नी
स		
न ध न र स	न ध प प र	ग र स –
अ धि ऽ ऽ का	ऽ ऽ ई ता ऽ	ऽ ऽ को ऽ
मं प	म	
न र – ग म	ध न स न ध	प मं ग मं
फ ल ऽ स य	पै ऽ ऽ हो ऽ	आ ऽ ऽ ज

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

द्वितीय किरण

राग—भूपाली।

ध्यान

गौरद्युति कुंकुमलिप्तदेहास्तुङ्गस्तनी चन्द्रमुखी मनोज्ञा।
कान्त स्मरन्ति विरहेण दूना भूपालिकेयरसशान्ति युक्ता॥

—संगीत दर्पणम्।

लक्षण

भूपाली नाम रागस्त्विह सरिगपधै पचतीव्रस्वरै स्या-
दारोहे चावरोहेऽपिच स खलु पुनर्नैवभेदं प्रपेदे॥
गान्धारो धैवतोऽत्र प्रविलसत उभौवादि सम्वादिनौतौ।
प्रख्यातश्चौडुवोऽयं निशि गुणिनिकरैर्गीयते पूर्व यामे॥

—राग कल्पद्रुमाकुरे।

आरोहे चावरोहे च भूपाली मनि वर्जिता।
गाधा धैवत संवादिन्युक्ता तीव्र स्वरैर्निशि॥

—राग चन्द्रिकायाम्।

आरोही,अवरोहि में सुर मनि कीन्हें त्याग।
धग सवादी वादितें कहौं भूपाली राग॥

— राग चन्द्रिका सार।
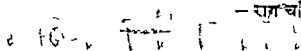
नोट—भूपाली राग कल्याणथाट से उत्पन्न हुआ है। इसमें म नि वर्जित हैं और बाकी सब सुर शुद्ध लगते हैं इसकी जाति ओडव, वादी गन्धार, सम्वादी धैवत है। यह राग रात्रि के प्रथम पहर में गाया जाता है।

आरोह-अवरोह

स र, ग, प, ध, स,—सं, ध, प, ग, र, स।

पकड़

ग, र, सध, सरग, पग, धपग, र, स।

अलाप

(१) ग, र, स, सध, सरग, रग, पग धप, रग, ग, र, स, सध, सरग।

(२) ग, र, स, सरगरस, पग, धपग, सरग, पग, गर, स, धर, स।

(३) स, रस, ग, रग, ध, सरग, धपग, पग, रग, रस, धर, स।

(४) स, ग, रग, सरग, पधसरग, गपग गपधपग, पग, रग, र, स, ध, सरग।

(५) सं, ध, प, ध प धस, रस, गरस, सरगपगरस, पग, धपग, सं, पग, रग, ग, र, स, ध, र स।

(६) पपधस, धस पधस, गगपधस, ग, रग, पगधपग गपधसं, धपग धपग, पग, रग, र, स, सर, र।

(७) स, रस, गरस, सरगपगरस पग, धपग गपधसधपग, स, धपग धपग, पग, ग, र, स, ध, र, स।

(८) सं, धसं, पधस, गगपधसं, सरगपधस ररंसं, गंरसं, संरगपगरंसं, गंरस, रस, स, ध, प, ग, सरगपधसरग, रपगरसं, ध, प, धरस, ध, प, मं, ध, प, ग, धपग, रग, पर, स, धर, स।

(९) सरगरगपगर, गपधसधपगर, गपधसंरसधपगर, गपधसरगरंस-धपगर गपधसरगपपगरंससधपगर, स, धपगर, धपगर, पगर, गर, ग, र, स, धरस।

(१०) गग, पधस, धस, रस, संरगंरसपपगरस, रसध, गरस, ध, प, ग, गपधसरंगरसध, प, ग, धपग, रग, प, र, स, धर, स।

(११) सस रर सस गग रर सस, पप पग रर सस, ससधपपगरस, गंगरंससधपपगरसस, सरगपधसंरगंपपगरससंधपपगरस ।

राग—भूपाली, त्रिताल।

लक्षण गीत

मनि वरज गाय रागनि कर जय भूपाली अङ्ग कहत गुनी सय शुद्ध कल्याण विलुमन तजत। गान्धार वादी अरु धा समवादी देश कार में अशमु धैवत राग विभास सजत कोमल धर शास्त्र भेद समझाय चतुर।

स्थायी

+	२	०	३
	स र	ग ग प ग	– र स र
	म नि	व र ज गा	ऽ य रा ऽ
स ध़ स र	ग ग – –	ग – ग र	ग प ध सं
ग नि क र	ज व ऽ ऽ	भू ऽ पा ऽ	ली ऽ अं ग
ध प ग र	ग र स स	स र स सं	सं – प ध
क ह त गु	नि ऽ स ब	शु ऽ द्ध क	ल्या ऽ ण वि
सं सं ध प	ग र स र		
लु म न त	ज त म नि		

अन्तरा

+	२	०	३
		प – ग –	प – सं ध
		गा ऽ धा ऽ	दी ऽ अ रु

		सं	
सं – सं सं	सं रं सं –	सं ध ध ध	स स सं –
धा ऽ स म	वा ऽ दी ऽ	दे ऽ श का	ऽ र में ऽ
	ध सं		ध
सं रं गं रं	सं र सं ध	प ग प ध	सं – सं सं
अ ऽ श सु	धै ऽ व त	रा ऽ ग वि	भा ऽ स स
प		ध स	
ध प ग प	ग र स स	स र स सं	– सं सप ध
ज त को ऽ	म ल ध र	शा ऽ स्त्र भे	ऽ द स म
ध			
सं – ध प	ग र स र		
भा ऽ य च	तु र म नि		

राग–भूपाली।

त्रिताल

जै गणेश गणनाथ दयानिधि सकल विघ्न कर दूर हमारे।
लम्बोदर गज वदन मनोहर कर त्रिशूल परशुवर धारे।
ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मन में ऋषि मुनि गण सब दास तिहारे।

—ब्रह्मानन्द।

स्थायी

+	२	०	३
		सं र	र
		ध सं ध प	ग र स र
		जै ऽ ग णे	ऽ श ग ण

ध प | प | | प
प – ग र | ग प ध ध | गपधसं ध प | ग र स र
ना ऽ थ द | या ऽ नि धि | जै ऽ ग णे | ऽ श ग ए

ध प | प सं | प प ध ध | सं
प – ग र | ग प प ध | ग ग प र | ग प ध ध
ना ऽ थ द | या ऽ नि धि | म क ल वि | ऽ प्र क र

र
पध सं ध प | धस धप गर सर | |
दू ऽ र ह | मा ऽ रे ऽ | |

अन्तरा

\+ २ ० ३

| | प प |
| | ग – ग र | ग प सं ध
| | ल ऽ म्बो ऽ | द र ग ज

र | रं रं | सं स मं | गं ग
स मं स मं | सं रं स सं | ध ध ध स | – स रं र
व द न म | नो ऽ ह र | क र त्रि शू | ऽ ल प र

र | मं सं | सं सं | मं
संर ग रं सं | ध मं ध प | ध – ध सं | ध प ध प
शू ऽ ध र | धा ऽ रे ऽ | वृ ऽ ष्टा ऽ | दि क सु र

प | | प प | सं
ग – ध प | र र स – | स स ग ग | प प ध ध
ध्या ऽ व त | म न में ऽ | रि पि मु नि | ग ण स ब

पध संध प	धसधपगरसर	पधपध संध प	ग र स स
दा ऽ स ति	हा ऽ रे ऽ	जै ऽ ग णे	ऽ श ग ए

राग—भूपाली।

त्रिताल

नहिं लैहों उतराई प्रभु तुमसे।
कर मुद्रिका देन प्रभु लागे लेहु केवट आपन उतराई॥
हमरे कुल की रीति यही है चरण लागि करिहों सेवकाई।
नदी नार के हम हैं खेवेया भव सागर के तुम रघुराई॥
तुलसिदास प्रभु तुमरे दरस ते केवट चरण गहे अकुलाई॥

—तुलसीदास।

स्थायी

+	०	०	३
प प	प ग		
ग ग	ग गप ग र	गप धस ध प	ग रग स र
न हिं	लै हों उ त	रा ऽ ई ऽ	प्र भु तु म
ध			
प ग ग ग	ग गप ग र	गप धसं ध प	ग ग ग र
से ऽ न हिं	लै हों उ त	रा ऽ ई ऽ	क र मु ऽ
			ध
ग प ध प	स स सं सं	स — सं —	पध स प ध
द्रिका ऽ दे	ऽ न प्र भु	ला ऽ गे ऽ	ले ऽ हु के
	प प		
र स ध प	ग प ग र	गप धसं ध प	ग रग स र
व ट आ ऽ	प न उ त	रा ऽ ई ऽ	प्र भु तु म

अन्तरा

+	२	०	३
			ग प गप धसं
			ह म रे ऽ
ध ध ग र	ग प ध प	रग पध पग रस	ग ग र स
कु ल की ऽ	री ऽ ति य	ही ऽ है ऽ	च र ण ला
ध प प ध	स र ग प	गप धम धप गर	ग ग – र
ऽ गि फ र	हों ऽ से व	का ऽ ई ऽ	न दी ऽ ना
ग प स ध	स म सं स	सं रं सं सं	गं गं रं सं
ऽ र के ऽ	ह म हैं खे	वै ऽ या ऽ	भ व सा ऽ
र र सं ध	ग प ग र	गप धम ध प	ग रग स र
ग र के ऽ	तु म र घु	रा ऽ ई ऽ	प्र भु तु म

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग–भूपाली ।

तेवड़ा

मन रे परसि हरि के चरण ।
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन ॥
जे चरण प्रहलाद परसे इन्द्र पदवी धरन ।
जिन चरण ध्रुव अटल कीनो राखि अपने सरन ॥
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो नख सिखौ श्रीभरन ।
जिन चरण प्रभु परसि लीने तरी गौतम घरन ॥
जिन चरण कालीहि नाथ्यो गोपलीला करन ।
जिन चरण धारयो गोवर्धन गरव मघवा हरन ॥
दास मीरा लाल गिरधर अगम तारन तरन ॥

—मीरा बाई ।

स्थायी

+	२	३	+	२	३
				(प) ग र	गध ‿ प (ध)
				म न	रे ऽ
(ग) र ग र	स ध	(स) स र	(ग) प ग ग	प धसं ‿	(सं) ध प
प र सि	ह रि	के ऽ	च र न	म न	रे ऽ
(प) ग प ध	(रं) म स	सं म	(प) ग प ध	(ध) प ग	र स
सु भ ग	सी ऽ	त ल	क म ल	को ऽ	म ल

६

ध	र स	र	ध	प	
प र ग	स ध़	स र	प ग र	ग र	गध प
त्रि वि ध	ज्वा ऽ	ला ऽ	ह र न	म न	रे ऽ

अन्तरा

+	२	३	+	२	३
प	रं	र	सं		
ग ग प	सं ध	सं सं	ध ध सं	रं सं	ध प
जे ऽ च	र ण	प्र ह्	ला ऽ द	प र	से ऽ
प	र	गं	स		
ग प ध	सं सं	रं स	ध प ग	रग पध	सं सं
इ ऽ न्द्र	प द	वी ऽ	ध र न	म न	रे ऽ
र्ं		सं	गं		
गं गं रं	गं रं	सं ध	प ध सं	रं गं	रं मं
जि न घ	र न	ध्रु व	अ ट ल	की ऽ	नो ऽ
र	ध	र	ध		
सं रं गं	प ध	स ध	प गर स	ग र	गध प
रा ऽ खि	अ प	ने ऽ	स र न	म न	रे ऽ

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग–भूपाली ।

झपताल

वीर रणधीर मुनि नाथ मति धीर तुम जानौं नियलानि के बधन हारे ।
गाढे रन नेक नहिं ठाढे तुम होहुगे व्यर्थ कर परशु धनु धरन हारे ॥
मानि कुल रीति नहिं यधौं तोहिं जानि द्विज सामुहे ऐसो कटु कथन हारे।
नाहिं तो लखन भृगुनाथ अति रोकि रिसिसपने नहिं काहु के सहन हारे ॥
––भृगुनाथ ।

स्थायी

+		२			०		३		
प		प	स		प				
ग	गर	ग	ध	प	ग	गर	गप	गर	स
वी	ऽ	र	र	ण	धी	ऽ	र	मु	नि
र	स			प	ध	ग	प		
स	ध़	स	र	ग	प	र	ग	र	स
ना	ऽ	थ	म	ति	धी	ऽ	र	तु	म
प		प	प	ग	प	ध		र	
ग	–	ग	ग	र	ग	प	ध	सं	सं
जा	ऽ	नो	नि	व	ला	ऽ	नि	के	ऽ
ध		गं							
प	ध	रं	स	धप	धसं	धप	गप	गर	सर
ध	ध	न	हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		२			०		३		
ध			र		र			र	
प	ग	प	मं	ध	सं	—	सं	सं	सं
गा	ऽ	ढे	र	न	ने	ऽ	क	न	हि
र		सं			र	सं		स	
सं	ध	ध	सं	रं	सं	ध	स	ध	प
ठा	ऽ	ढे	तु	म	हो	ऽ	हु	गे	ऽ
पं			प		र		रं		
गं	गं	रं	गं	र	सं	ध	स	ध	प
व्य	ऽ	र्थ	क	र	प	र	शु	ध	शु
प			र						
ग	प	ध	सं	धप	धस	धप	गप	गर	स
ध	र	न	हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

+		२			०		३		
प					ध		प		
ग	—	ग	र	ग	प	र	ग	र	स
मा	ऽ	नि	कु	ल	री	ऽ	ति	न	हिं
स	स	ध	प	ध	स	र	ग	र	स
ध	धौं	ऽ	तो	हिं	जा	ऽ	नि	हि	ज

र			प						
म	ग	र	ग	ग	ग	—	ग	ग	ग
सा	ऽ	मु	हे	ऽ	ते	ऽ	सो	क	टु
ग		ध				र			
र	ग	प	ध	ध	पध	सं	ध	प	ग
क	थ	न	हा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

आभोग

+		२			०		३		
ध		ध	र		र		रें	र	
प	ग	प	सं	ध	सं	स	सं	सं	स
ना	ऽ	हिं	तो	ऽ	ल	ख	न	भृ	गु
र					रें		र		
सं	ध	ध	सं	रं	सं	ध	सं	ध	प
ना	ऽ	थ	अ	ति	रो	ऽ	कि	रि	सि
प		प	प	ग	प			र	
ग	ग	ग	ग	र	ग	प	ध	सं	—
स	प	नें	न	हिं	का	ऽ	हू	के	ऽ
ध	सं								
प	ध	र	म	धप	धसं	धप	गप	गर	स
स	ह	नें	श	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग–भूपाली।

सूल

साधे सुर साधे सब सुरलोक वेद। ओडव यही राग संगीत मत
प्रमान स रे ग प ध सं ध प ग रे स उलट पलट सुरन को॥

स्थायी

+		०		२		३		०	
		प				ध		प	
प	ग	ग	र	ग	ध	प	ग	ग	र
सा	ऽ	धे	ऽ	सु	र	म	ऽ	धे	ऽ
प		सं	रं	स				रं	
ग	प	ध	सं	ध	प	गर	प	स	र
स	ब	सु	र	लो	ऽ	क	वे	ऽ	

अन्तरा

+		०		२		३		०	
प					रं		र		
ग	ग	प	ध	प	स	स	स	स	र
ओ	ऽ	ड़	व	य	ही	ऽ	रा	ऽ	ग
सं			गं				रं		
ध	ध	स	रं	ग	र	स	सं	ध	प
सं	ऽ	गी	त	म	त	प्र	मा	ऽ	न
स	र	ग	प	ध	स	ध	प	ग	र

स	–	गं	रस	रं	सध	सं	धप	ग	सर
		उ	लट	प	लट	सु	रत	को	ऽ

राग–भूपाली।

चौताला

तूँहिं सूर्य तूँहिं चन्द्र तूँहिं अगिन,
तूँहिं आप तूँ अकास तूँहिं धरनि यज मान।
भव रुद्र उग्र शर्व पशुपति सम समान,
इशान भीम सकल तेरेहि अष्ट नाम॥

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
प		ग				प					
ग	–	र	ग	–	प	ग	–	र	स	र	स
तूं	ऽ	हिं	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	हिं	च	ऽ	न्द्र
र		स		प					स		
स	–	ध	स	ग	र	स	र	स	ध	ध	प
तूं	ऽ	हिं	प	व	न	तूं	ऽ	हिं	अ	गि	न
			प			ध					
स	–	र	ग	प	ध	सं	–	ध	सं	–	सं
तू	ऽ	हिं	आ	ऽ	प	तूं	ऽ	अ	का	ऽ	स
			प		प						
सं	ग	रं	रं	सं	ध	सं	ध	प	ग	र	स
तू	ऽ	हिं	ध	र	नि	य	ज	ऽ	मा	ऽ	न

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
धप	पग	–	प	सं	–ध	धसं	–	सं	सं	रं	मं
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	अ	स	ऽ	ई
सं	सध	–	स	सं	रं	संगं	रं	मंरं	सं	ध	प
प	शु	ऽ	प	ति	ऽ	स	म	स	मा	ऽ	न
प	ग	र	पग	प	संध	सं	–	सं	सं	रं	स
ई	ऽ	ऽ	शा	ऽ	न	भी	ऽ	म	स	क	ल
संगं	रं	–	स	संप	ध	सं	ध	प	ग	र	स
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	रि	श्र	ऽ	प्ट	ना	ऽ	म

राग–भूपाली ।

चौताला

वाणी चारो के व्योहार सुन लीजे हो गुणि जन तब पावे यह विद्या सार ।
राजा गौरहार, फौजदार खन्डार, दिवान डागर, बकसी नउरहार ॥
अचल सुर पंचम चल सुर रिषभ मध्यम धैवत निषाद गान्धार ।
सप्तक तीन इकइस मूर्छना बाइस श्रुति उन्चास कूट तान तानसेन अधार ॥
—तानसेन ।

स्थायी

+		२				०		३			
सग	ग	ग	धप	ग	ग	प	प	ग	ग	र	स
वा	ऽ	णी	चा	रो	के	ऽ	व्यो	ऽ	हा	ऽ	र
स	स	ध	म	स	म	स	गर	ग	ग	र	स
सु	न	ऽ	ली	ऽ	जे	हो	ऽ	गु	णि	ज	न
						प	प				
स	स	गर	ग	ग	ग	ग	ग	र	ग	प	प
त	ब	ऽ	पा	ऽ	वे	य	ह	ऽ	वि	ऽ	द्या
प		सं	रं	स			ध	ग	प		
ग	प	ध	स	ध	प	ग	प	र	ग	र	म
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
प			र						र		
ग	प	ध	सं	सं	सं	सं	सं	स	सं	स	
रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	गौ	ऽ	र	ऽ	हा	ऽ	
		मं						र			
सं	सं	ध	मं	सं	र	स	ध	सं	ध	ध	
फौ	ऽ	ज़	दा	ऽ	र	ख	ऽ	ऽ	न्दा	ऽ	
		ग						गं			
गं	गं	रं	ग	रं	स	सं	ध	र	सं	ध	
दि	वा	न	डा	ग	र	च	क	सी	न	उ	
प							ध				
ग	प	ध	स	ध	प	ग	प	र	ग	र	
हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

सचारी

+		०		२		०		३		४	
				प					ग		
ग	ग	ग	गर	ग	ग	प	र	ग	र	र	स
अ	च	ल	सु	ऽ	र	पं	ऽ	ऽ	च	ऽ	म
		म						ध			
स	स	ध़	म	स	स	स	गर	प	ग	र	म
च	ल	ऽ	सु	ऽ	र	री	ऽ	ऽ	ध	ऽ	म

स र | स ग | ग ग | ग प | ध ध | प ग
म ध्य | म धै | व त | नि पा | ऽ ऽ | ऽ ट

प ध | सं ध | स प | ध प | ग प | र ग
गा ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | न्धा ऽ | ऽ ऽ | ऽ र

आभोग

\+ ० २ ० ३ ४

ग प | ध सं | सं सं | सं सं | सं ध | सं स
स स | क ती | ऽ न | इ क | इ स | मू ऽ

सं स | ध सं | रं गं | रं सं | ध सं | ध प
छे ना | ऽ घा | इ स | श्रु ति | ऽ ऽ | ऽ ऽ

ध प | र ग | ग र | ग प | ध सं | सं सं
उ न | ऽ घा | ऽ स | कू ऽ | ट ता | ऽ न

ध र | सं ध | ध प | ग प | र ग | र स
ता ऽ | न से | ऽ न | श्र घा | ऽ ऽ | ऽ र

राग–भूपाली।

धमार

बाजत मृदंग सरस भेदन सों बीन सारंगी कर ताल।
हैं हैं गोपी बिच बिच मोहन नाचत दै दै ताल॥

स्थायी

+	२	३
		र
		स ध स र
		वा ज त मृ
र	र प ग	प ध
प ग ग ग –	ग – ग र –	ग – प –
दं ऽ ऽ ग ऽ	स ऽ र स ऽ	भे ऽ ऽ ऽ
ग र	र रं	स
र ग र स र	म – म स –	ध – प –
द न ऽ सों ऽ	ऽ ऽ वी ऽ ऽ	न ऽ सा ऽ
प	ध ग	
प र – ग –	प – र ग र	म ध स र
रं गी ऽ क ऽ	र ऽ ता ऽ ल	बा ज त मृ

अन्तरा

+	२	३
ध		रं
प ग – प –	ध प स – –	सं – – –
हैं ऽ ऽ हैं ऽ	ऽ ऽ गो ऽ ऽ	पी ऽ ऽ ऽ
सं	रं	
सं ध – स –	रं – सं – –	ध – प –
बि च ऽ बि ऽ	च ऽ मो ऽ ऽ	ह ऽ न ऽ
प	सं ग	
सं स ध प ग	ध प र र	स ध म र
ना च त दै ऽ	दै ऽ ता ऽ ल	बा ज त मृ

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

तृतीय किरण

राग–हमीर ।

ध्यान

हरिताङ्गी हरिद्वस्त्रा मणिकुण्डल भूषिता ।
पीनोरम्भा गुञ्जधारी हम्मीरी सुकर प्रिया ॥

—संगीत दर्पणम् ।

लक्षण

हंमीरः परिपूर्णराग इह गान्धारग्रहो धांशकः ।
केचित् रागमिमं जगु कति परे षड्ग्रहांशं विदु ॥
आरोहे रिनिदुर्बला निगदिता यश्चावरोहे मतो ।
रात्रौ यामप्रहरे द्विमध्यमलसत्तीव्रस्वरैर्गीयते ॥

—राग कल्पद्रुमाङ्कुरे ।

दो मध्यम तीवर सवहिं, धैवत वादी जान।
सम्वादी गंधार है, राग हमीर बखान॥

—राग चन्द्रिकासार।

नोट—हमीर राग कल्याणथाट से उत्पन्न होता है। इस राग में दोनों मध्यम लगते हैं। तीव्र मध्यम का प्रयोग थोड़ा होता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोह तथा अवरोह दोनों में होता है। इसमें वादी धैवत और संवादी गांधार है। आरोह में पञ्चम वर्जित है और अवरोह में वक्र सम्पूर्ण है। यह राग रात्रि के प्रथम पहर में गाया जाता है।

आरोह-अवरोह

स, रस, गमध, नध, सं—संनधप, मंपधग, गमरस।

पकड़

स, रस, गमध।

अलाप

(१) स, रस, गमध, ध, प, ग, मरगमरर, ग, मर, स, रस, गमध।

(२) स, रस, गमध, मध, प, ग, मर, गमध, प, र, पगमर, प, ग मर सर, स, गमध।

(३) स, रस, गमरगमध, प, ग, मर, स, नध, प गमरगमधप, ग, मर, सर, स, गमध।

(४) स, सर, गमध, नध सं, नध, प, ध, प, ग, मर, गमध, प, ग, मर सर, स, गमध।

(५) स, नध, प, मपध, प स, ररस, गमरस, सरगमध, प, ग, मरस, मरंसंनधप, गमध, प, गमरस, सरस, गमध ।

(६) ध, पध, गमध, रगमध, सरगमध, नध, स, नध, स, नध, रसं, नध, गमरंस, नध, पपंगमंरंसं, नध, नध, पध, गगमरगमध, पग, मर सर, स, रस गमध ।

(७) पधगप, गमप, सरगमप, धप, नधप, सं, नध, प, रंम, नध, धगम रंस, नध, प, पंपगमरसं, नध, प, रंसं, नध, प, मपनध, प, ग, मर, गमध, पर, स, सरस, गमध ।

(८) सं, ध, ध, सं, पपध, सं, सरगमध, सध, मं, रंस, गंमरसं, पपंगं गंमरसं, सरस, नध, प, ध, प, ग, मर, गमध, प, ग, मर, सरस, गमध ।

राग—हमीर, त्रिताल।

लक्षण गीत।

गुणि जन गावत राग हमीर। सम्पूरन सुर ठाट मिलावत दोनों मध्यम लागत सुमधुर हरपत सब जन धीर। धैवत वादी र समवादी आरोहन में पञ्चम वरजित कामोदि केदार दिखावत। स स म ग प मं प प न ध सं र सं न ध प गावत राग हमीर॥

स्थायी

+	२	०	३
	ध	ध	प
	न ध सं सं	न न म प	प – ग म
	गु णि ज न	गा ऽ व त	रा ऽ ग ह
न	ध सं		
ध – – ध	सं मं ध प	प – प –	ध ध प प
मी ऽ ऽ र	गु णि ज न	स ऽ म्पू ऽ	र न सु र
प	न		ग
ग – म र	स र स स	स – म ग	प – प प
ठा ऽ ट मि	ला ऽ व त	दो ऽ नों ऽ	म ऽ ध्य म
मं	सं		प
न ध सं र	स सं ध प	सं स गं ग	मं र मं र
ला ऽ ग त	सु म धु र	ह र प त	स ब ज न
	म	मं	प
स – न –	ध – – प	प न ध न	प – ग म
धी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र	गा ऽ व त	रा ऽ ग ह

ध – – ध			
मो ऽ ऽ र			

अन्तरा

+	२	०	३
		म	प
		प – प प	सं – सं –
		धै ऽ व त	या ऽ दी ऽ
		मं न	
स –सं सं	सं रं सं –	ध – ध –	संसस स
रे ऽ स म	वा ऽ दी ऽ	आ ऽ रो ऽ	ह न मे ऽ
म	स	मं	
सं रं सं मं	ध धप प	प – प –	ध – प –
प ऽ च म	व र जि त	का ऽ मो ऽ	दी ऽ के ऽ
प			
ग – म र	स र स म	स स म ग	प मं ध प
दा ऽ र दि	खा ऽ व त		
		मं	प
न धस र	स न धप	प न ध न	(प)– ग म
		गा ऽ व त	रा ऽ ग ह
ध – – ध			
मो ऽ ऽ र			

राग–हमीर ।

त्रिताल

तुम गोपाल मोंसों बहुत करी ।
नर देही सुमिरन को दीनी मो पापी सो कछु न सरी ॥
गर्भवास अति त्रास अधो मुख तहा न मेरी सुध बिसरी ।
पावक जठर जरन नहिं दीनो कंचन सी मेरी देह करी ॥
जग में जनमि पाप बहु कीने आदि अंतलौं सब बिगरी ।
सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद की लाज धरी ॥

—सूरदास।

स्थायी

+	२	०	३
	(सं न) न ध नर संन	धन नध पमं प	पमं धप मग म
	तु म गो पा	ऽ ल मों सों	ब हु त क
संन ध ध ध	(ध) मं प ग म	गम धध पमं प	ग म गम पं
री ऽ ऽ ऽ	न र दे ऽ	ही ऽ सु मि	र न को ऽ
गम गर सन स	(म) न ध नर संन	धन नध पमं प	पमं धप मग म
दी ऽ नी ऽ	मो ऽ पा ऽ	पी ऽ सो ऽ	क छु न स
संन ध ध ध			
री ऽ ऽ ऽ			

अन्तरा

+	२	०	३
	प – स स	– र स सं	धन सं सं रं
	ग ऽ भै वा	ऽ स अ ति	आ ऽ स अ
सन संन ध प	स प प ध	पम प ग म	सं ध ध न
धो ऽ मु ख	त हा ऽ न	मे ऽ री ऽ	सु ध वि स
धन सं न ध	स गं गं मं	रं गं सं न	ध न सं रं
री ऽ ऽ ऽ	पा ऽ व क	ज ठ र ज	र न न हिं
सन सन धप मंप	धन सं ध प	मंप ध ग म	संन ध ध न
दी ऽ नो ऽ	क ऽ च न	सी ऽ मैं री	दे ऽ ए क
धन संरं संन धप			
री ऽ ऽ ऽ			
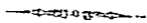
राग–हमीर।

त्रिताल

कथ के बाधे ऊखल दाम।
कमलनयन बाहर करि राखे तू बैठी सुख धाम॥
हो निर्दयी दया कछु नाहीं लागि रही घर काम।
देख छुधाते मुख कुम्हिलानों अति कोमल तनु श्याम॥
छोरो बेग बड़ी बिरिया भई बीत गए युग याम।
तेरी त्रास निकट नहिं आवत बोल सकत नहिं राम॥
जन कारण भुज आप बँधाई बचन कियो ऋषिकाम।
ता दिन ते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर सो नाम॥

—सूरदा

स्थायी

+	२	०	३
	सं न ध प	प नध सं न	म प ग
	क थ के ऽ	बा ऽ धे ऽ	ऊ ऽ ख
ध – – ध	सं न ध प	प नध स न	मप ध म
दा ऽ ऽ म	क थ के ऽ	क म ल न	य न बा
ग म ध प	गम र सन म	म प प ध	पम प ग म
ह र क रि	रा ऽ खे ऽ	तू ऽ बै ऽ	ठी ऽ सु ख

ध – – ध			
धा ऽ ऽ म			

अन्तरा

+	२	०	३
		ध र	
		प – सं –	सं र सं सं
		हो ऽ नि ऽ	दें यी ऽ द
र			
स ध स रं	सं नर स –	प – सं ध	पम प ग म
या ऽ क छु	ना ऽ हीं ऽ	ला ऽ गि र	री ऽ घ र
न		म	रं
ध प रग मध	प गम र स	गं मं पं गं	मं रं सं –
का ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ म	दे ऽ ख छु	धा ऽ ते ऽ
	र	र	
नध नध सं र	संन स ध प	स मं ध प	मप धप ग म
मु ख कु म्हि	ला ऽ नो ऽ	अ ति को ऽ	म ल त नु
मं			
न ध – ध			
श्या ऽ ऽ म			

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग–हमीर।

झपताल

देख री आज नव नागरी भेष धरि लली के छलन हित ललन कैमसजे।
पहिरि भूषण वसन दृगन कजरा दिये निरखि शृंगार सुर वधू मनमें लजे।
मंद मुसुकान मग चलत गति ठुमकि के मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजे।
रूप अभिराम नारायण लखि श्याम कौन सी माननी मान जो ना तजे।

—नारायण।

स्थायी

+		२			०		३		
न								ध,	
ध	—	नध	सन	र	सं	न	ध	म	
दे	ऽ	ख	री	ऽ	आ	ऽ	ज	न	
ध,					ध,			प	
म	—	प	ध	प	मं	—	प	ग	मर
ना	ऽ	ग	री	ऽ	भे	ऽ	ष	ध	रि
म	म				प	ध		प	
ग	ग	म	ध	प	ध	मं	प	ग	मर
ल	ली	ऽ	के	ऽ	छ	ल	न	हि	त
ग	प				ग				म
प	गम	र	स	—	र	ग	म	प	गम
ल	ल	न	कै	ऽ	मे	ऽ	स	जे	ऽ

अन्तरा

+		२			०		३		
प	प	सं	स	–	सं	स	रं	सं	सं
प	ह्रि	रि	भू	ऽ	प	ण	ब	स	न
सं	म								
ध	ध	न	म	रं	स	न	ध	प	–
द	ग	न	क	ज	रा	ऽ	दि	ये	ऽ
मं	मं		न					ध	
गं	गम	रं	सं	रं	सं	न	ध	म	प
नि	र	ख्रि	शृ	ऽ	गा	ऽ	र	सु	र
	सं								म
प	न	–	सं	र	सं	न	ध	प	गम
व	धू	ऽ	म	न	में	ऽ	ल	जे	ऽ

सचारी

+		२			०		३		
म									
ग	म	ग	म	ग	प	–	प	ध	प
म	ऽ	द	सु	सु	का	ऽ	न	म	ग
म	म				न				
ध	ध	न	सं	रं	सं	न	ध	प	–
च	ल	त	ग	ति	टु	मु	कि	के	ऽ

मं	प	न	सं	र	नं (न)	न	ध	प	-
म	धु	र	धु	नि	किं	ऽ	कि	णी	ऽ

ग (प)	ग (म)	म	ध	प	गम (म)	र	र (स)	म	-
च	र	ण	नू	ऽ	पु	र	य	जो	ऽ

आभोग

+		२			०		३		
प	-	स	सं	सं	सं	-	रं	सं	-
रू	ऽ	प	अ	भि	रा	ऽ	म	ना	ऽ
ध (म)	ध (म)	न	सं	रं	म	-	ध (म)	न	प
रा	ऽ	य	ण	ल	गि	ऽ	श्या	ऽ	म
ग (मं)	मं	र	स (म)	रं	स	न	ध	प	-
कौ	ऽ	न	सी	ऽ	मा	ऽ	न	नो	ऽ
प	-	न	स	रं	म	न	ध	प	गम (म)
मा	ऽ	न	जो	ऽ	ना	ऽ	त	जे	ऽ

राग—हमीर।

तेवड़ा

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरन भव भय दारुणम्।
नव कंज लोचन कज मुख कर कज पद कंजारुणम्॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तडित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीन बन्धु दीनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनँद कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम्॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु हार अग, विभूषणम्।
आजान भुज सर चाप धरि सग्रामजित खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसी दास शकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास करि कामादि खल दल गजनम्॥

—तुलसीदास।

स्थायी

+	२	३	+	०	२
					म –
					श्री ऽ
प – ध	म प ग		ध – रं	मं न	ध प
रा ऽ म	च ऽ न्द्र	कृ	पा ऽ लु	भ जु	म न
म प ध	प म प	प	ग – म	ध –	ग म
ह र न	भ व भ	य	दा ऽ रु	ण ऽ	न व

ध – प | प मं | प प | ध – प | प मं | प
क ऽ ज | लो ऽ | च न | कं ऽ ज | मु ख | क

ग म र | ग म | ध प | ग म र | स – |
कं ऽ ज | प द | क ऽ | जा ऽ रु | ण ऽ |

अन्तरा

\+ २ ३ + २ ०

प
क

सं – स | न स | स स | न स सं | सं न | सं
न्द ऽ र्प | अ ग | णि त | अमित | छ वि | न

स ध ध | ध न | स रं | स न मं | ध – | प
नी ऽ ल | नी ऽ | र ज | सु ऽ न्द | र ऽ | प

ग म र | स न | म म | स सं ध | प मं | प
पी ऽ त | मा ऽ | न हु | त ड़ि त | रु चि | शु

ग म र | ग म | ध प | ग म र | स – |
चीऽमि | ज न | क सु | ता ऽ व | र ऽ |

राग–हमीर ।

मूल

पाँच वदन सुख सदन पाँच त्रैलोचन मडित, अर्ध चन्द्र अरु गंग जटन के जूट घमंडित । भूखन भस्म भुजंग नाद नादेश्वर वन्दित, कनक भग में मगन अंग आनन्द उमडित । घाघम्बर अम्बर धरे अरधग गौरी कुन्दन वदन । जे कृत्य उजागर गिरि वसन वुध प्रकाश वन्दित चरन ॥

—बुध प्रकाश ।

स्थायी

+		०		✓		३		०	
सं	–	सं	ध	ध	प	मं	प	(प) ग	म
पाँ	ऽ	ऽ	च	ऽ	व	द		सु	ख
(र) ध	ध	ध	ध	–	ध	ध	–	ध	–
स	द	न	पाँ	ऽ	च	त्रै	ऽ	लो	ऽ
(र) स	सं	(म) ध	ध	प	प	(प) ग	म	र	ग
च	न	म	ऽ	डि	त	अ	ऽ	र्ध	च
–	म	प	प	(प) ग	म	र	र	ग	म
ऽ	द्र	अ	रु	ग	ऽ	ग	ज	ट	न
(ध) प	–	(प) ग	म	(स) र	र	स	र	स	स
के	ऽ	जू	ऽ	ट	घ	म	ऽ	डि	त

अन्तरा

+		०		२		३		०	
ध				रं					
प	प	सं	स	सं	–	स	स	ध	ध
भू	ऽ	ख	न	भ	ऽ	स्म	मु	जं	ऽ
म								मं	
ध	स	–	सं	रं	स	–	–	गं	–
ग	ना	ऽ	द	ना	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ
गं						सं			
र	रं	सं	–	सं	सं	ध	ध	ध	सं
श्व	र	ध	ऽ	न्दि	त	क	न	क	मं
				रं					
–	सं	सं	–	स	स	सं	स	–	मं
ऽ	ग	मे	ऽ	म	ग	न	श्र	ऽ	ग
र		म							
सं	–	ग	–	र	र	सं	–	ध	ध
आ	ऽ	न	ऽ	न्द	उ	म	ऽ	हि	त

सचारी

+		०		२		३		०	
र		म		म		म			
स	–	ध	–	ध	ध	ध	–	ध	ध
धा	ऽ	धं	ऽ	ध	र	ध	ऽ	ध	र

मं	ध	सं	स	–	सं	सं	–	रसं	–
श्र	र	ऽ	ध	ऽ	ग	गौ	ऽ	री	ऽ
रस	–	सं	स	स	सं	सं	संन	ध	ध
कु	ऽ	न्द	न	य	द	न	ऽ	ऽ	ऽ

आभोग

+		०		२		३		०	
संध	ध	रसं	–	सं	सं	सं	–	सं	सं
ज	य	कृ	ऽ	त्य	उ	जा	ऽ	ग	र
नध	ध	ध	ध	ध	ध	सं	–	रसं	स
गि	रि	व	स	न	बु	द्धि	ऽ	प्र	का
–	स	गं	मं	रं	गं	रं	सं	सं	ध
ऽ	श	व	ऽ	दि	त	ऽ	च	र	न

राग—हमीर।

एकताल

बाजत बधाव री आज श्रीगोकुल में।
यशुमति नन्द लाल पायो कंसराज कालपायो,
गोपन ने ग्वाल पायो वनको सिंगार री॥
गौअन गोपाल पायो याचकन भाग पायो,
सखियन सुहाग पायो पिया वर साँवरा री।
देवन नें प्राण पाया गुणियन ने ज्ञान पाया,
भक्तन भगवान पायो सूर सुख दावरा री।

—सूरदास

स्थायी

+		०		२		०		३		०	
र				म		म					
सं	धप	मप	ध	ग	म	ध	—	नस	धग	संरं	नस
बा	S	S	ज	त	ध	धा	S	व	री	S	S
र											
स	ध	प	गम	धप	मप	गम	धप	गम	रग	मर	नम
आ	S	ज	श्री	S	S	गो	S	कु	ल	मैं	S

अन्तरा

+		०		२		०		३		०	
ध	ध										
प	प	मन	म	म	स	म	न	र	संन	सं	स
य	शु	म	ति	नं	द	ला	S	ल	पा	S	यों

र		न				र	म		न		
सं	ध	ध	सन	सं	रं	सं	न	मं	ध	–	प
क	ऽ	स	रा	ऽ	ज	का	ऽ	ल	पा	ऽ	यो

मं	प					र	सं		न		
गं	म	र	स	संन	रं	सं	न	स	ध	–	प
गो	ऽ	प	न	ने	ऽ	ग्वा	ऽ	ल	पा	ऽ	यो

र				म		न					
सं	ध	पमं	प	ग	म	ध	–	नसं	धन	सर	नस
ध	न	को	ऽ	सिं	ऽ	गा	ऽ	र	री	ऽ	ऽ

राग–हमीर।

चौताला

सारस वदनि सारग नयनि चपक वदनि अमृतवचनि। कुच घटा' दशन दामिनि अधर विद्रुम शीश वेनि नैन मीन कीर नासा चन्द्रमुखी सुखदानि। चातुरी की सीमा जानि रूप की जो राशमानि। चपला की चमक जाको रहत नहिं कितहु छानि। मद नायक प्रभु सौं करन प्रेम मधुर वानि तीन लोक श्रेष्ठ मेरी श्री महारानि।

स्थायी

+		०		२		०		३	न	४	
ध	–	–	नमं	ध	र	सं	–	न	ध	न	प
मा	–	ऽ	र	ऽ	स	व	ऽ	ऽ	द	ऽ	नि

ध। प ध।
म — | प ध — प | ध म | प म | ग म
सा ऽ | ऽ र ऽ ग | न थ | ऽ नि | ऽ ऽ

म ग
ग — | म ध — प | म ग | मर म | र म
च ऽ | ऽ प ऽ क | व ऽ | द ऽ | नी ऽ

ग ग
स स | — र | प — | म ग | मर स | र म
अ मृ | ऽ त ऽ ऽ | व ऽ | ऽ च | ऽ नि

अन्तरा

\+ ० २ ० ३ ४
प
प प | — सं | सं — | स म | मं रं | सं म
कु च | ऽ घ | टा ऽ | द श | न दा | मि नि

स न म
ध ध | ध सं | स र | सं — | न ध | न प
अ ध | र वि | द्रु म | शी ऽ | श वे | ऽ नि

म म मं न म
ग म | र म | र सं | ध ध | स म | र स
नै ऽ | न मी | ऽ न | की ऽ | र ना | ऽ मा

मं मं म म
प — | प प | ध रं | म न | भ प | मंप गम
च ऽ | न्द्र मु | खी ऽ | सु च | ऽ दा | ऽ नि

संचारी

+		०		२		०		३		४	
म	—	मग	प	—	प	ध	न	ध	प	ध	प
चा	ऽ	तु	री	ऽ	की	सी	ऽ	मा	जा	ऽ	नि
प	—	ध	ध	स	सं	ध	न	ध	प	ध	प
रू	ऽ	प	की	ऽ	जो	रा	ऽ	शि	मा	ऽ	नि
ग	ग	मर	गम	ध	प	ग	गम	र	स	र	स
च	प	ऽ	ला	ऽ	की	च	म	क	जा	ऽ	कि
स	स	स	र	प	प	ग	गम	र	स	र	स
र	ह	त	ना	ऽ	हिं	कि	त	हुँ	छा	ऽ	नि

आभोग

+		०		२		०		३		४	
प	प	—	सं	—	सं	स	—	सं	सं	र	स
म	द	ऽ	ना	ऽ	घ	क	ऽ	प्र	भु	ऽ	सों
ध	ध	ध	स	—	र	म	स	न	ध	न	प
क	र	त	प्रे	ऽ	म	म	धु	र	या	ऽ	नि

सं गं	मं	रं	न सं	र	सं	न ध	न ध	स	म	र
ती	ऽ	न	लो	ऽ	क	श्रे	ऽ	ष्ट	मे	ऽ
म प	—	—	प	स ध	र	सं	न	ध	प	मप
श्री	ऽ	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग–हमीर।

धमार

अबीर गुलाल लाल केशररंग छिरकन वृजतियन को हरि पकरिके धायधाय।
काहू को लपट और झपट काहू को काहू को गरे लाय लाय॥

स्थायी

+	२	३
		म प
		प प ग म
		अ वि र गु
न	म	
ध – – न ध	सं – रं सं –	मं ध प प
ला ऽ ऽ ल ऽ	ला ऽ ल के ऽ	श र र ग
म	म प	न
प प – ध ध	प प प गम र	स र स स
छि र ऽ क त	वृ ज ति य न	को ऽ ह रि
न न		
स मं सन ध –	स रं सं नध	
प क रि के ऽ	धा य धा ऽ य	

अन्तरा

+	२	३
म		म
प प – सं –	– सं सं सं सं	सं रं स –
का हू ऽ को ऽ	ऽ ल प ट ऽ	औ ऽ र ऽ

न सं	न	
सं ध – मं –	सं रं सं – न	स ध प
झ प ऽ ट ऽ	का ऽ हू ऽ ऽ	को ऽ ऽ
म	स	
प म ग म रं	सं – ध सं न	र रं सं
का ऽ ऽ ऽ ऽ	हू ऽ को ऽ ऽ	ऽ ग रे
म		
प न ध सं न	र रं सं न ध	
ला ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ य ला ऽ य	

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

चतुर्थ किरण

राग—केदारा।

ध्यान

जटा दधानासितचन्द्रमौलि नागोत्तरीया धृतयोगपट्टा।
गंगाधरध्याननिमग्नचित्ता केदारिका दीपकरागिणीयम्॥

—संगीत दर्पणम्।

केदारस्त्वभिवर्णितो रिगविधैस्तीव्रै सदाऽलङ्कृतो।
धादी कोमल मध्यमो भवति सम्वादी च षड्ज स्वर॥
तीव्रोऽपि क्वचिदत्र मध्यम इहारोहे रिगौ वर्जितौ।
यामे च प्रथमे निशासु मधुर वीणा रवैर्गीयते॥

—राग कल्पद्रुमांकुरे।

मध्यम द्वै तीवर सवहीं, आरोहत रिग हान।
सम संवादी वादितें, केदारा पहिचान॥
—राग चन्द्रिकासार

नोट—केदारा राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों मध्यम लगते हैं। वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी षड्ज है, इसमें गान्धार बहुत कम है। आरोह में रिषभ और गान्धार वर्जित है। रात्रि के प्रथम प्रहर में यह गाया जाता है। केदारा चार प्रकार का होता है—शुद्ध केदारा, चाँदनी केदारा, जलधर केदारा, मलुहा केदारा यहाँ केवल शुद्ध केदारा लिखा जाता है।

आरोह—अवरोह

सम, मप, धप, नध, स—स, नध, प, मंपधप, म, गमरस।

पकड़

स, म, मप, धपम, रेस।

अलाप

(१) सम, पध, प, म, पमधपम, म, र म, सर, स।

(२) सम धम, पध, पम, धपम, समपधपम, पम, रम, मरस।

(३) स, रम, म, पम, समपधम, मधप, धम पम, म, रस, सरस।

(४) मम, मपम, धम, मप, प, धम मं, मध, प, मंपध, म, समपधम प, म रस, सरस।

(५) स, रस, म, रस, पम, रस, ध, प, म, रस, सं, नध, प, मंपध, पम, रस, ममरस, नधप, मंपधप, समरस ।

(६) पपस, पस, रस, मपस, समरस, समपधपमरस, स, नध, प, मंप, नध, प, मंपधपम, समपधम, पम रस, सरस ।

(७) ससममरस, ममपपधपममरस, ममपपमसंधपममरस, ममपपसंसं रंरससधपममरस, ममपपसममरंरंमसंधपममरस ।

(८) मपधपम, पपस, धस, रंस, मंमरस, परसं, धपममरस, सम, पमंध पस, रसमर, मंमंरसं, नधपपममरस ।

(९) मंपधपसमरस, मंपनधसंनधप, मपधपममरस, मंपनधसंसंरसनध पंमपधपममरस ।

राग—केदारा-एकताल।

लक्षण गीत

तन कहत केदारा चतुर मेल कल्याणी को मधुर आरोहन रिपम तज।
वादी सुधमध्यम सुर रात समय प्रथम पहर रीझत सब मारीत।

स्थायी

+ ० २ ० ३ ०

			मंपध मंप	म र	सर म
			त घ	क हे	त दे
म —	मग प	प प	म प	ध ध	प —
दा ऽ	रा च	तु र	मे ऽ	ल क	ल्या ऽ
मं प	ध प	म म	म —	प —	म रे
णी ऽ	को म	धु र	आ ऽ	रो ऽ	ह न
म —	प्र प	म म			
रि ऽ	प म	त ज			

अन्तरा

+ ० २ ० ३ ०

			प —	न —	स र्स
			वा ऽ	दी ऽ	सु ध

मं न
— स रं | सं मं | ध ध | सं स सं रं
ऽ ध्य म | सु र | रा ऽ | त स मे ऽ

म न
न ध प | म म | मं म | रं सं | सं रं
ध म प | इ र | री ऽ | भ त | स व

ग
न | ध प म म | गमध्र मंप | म र | सर स
ऽ | री ऽ न र | त व | क ह | त के

राग—केदारा।

त्रिताल

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
तुम सन काह छिपी करुणानिधि तुम उर अन्तरयामी।
जो तन दियो ताहि विसरायो ऐसो निमक हरामी॥
भरि भरि उदर विषय रस चाखत जैसे सूकर ग्रामी॥
हरि जन छाँडि हरि विमुखन की निशदिन करत गुलामी॥
पापी कौन बडो है मोसो सब पतितन में नामी॥
सूर पतित को ठौर कहाँ है सुनिये श्रीपति स्वामी॥

—सूरदास।

स्थायी

२ ० ३
ध | प म
| प मंग ध प | म — र र | स र स म
| मो ऽ स म | कौ ऽ न कु | टि ल ख ल

प		
ा पम –		
ा ऽमी ऽ		

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग-केदारा।

तेवड़ा

मेरी कौन गति वृज नाथ।
भजन विमुख अरु शरण नाहीं फिरत विषयन साथ॥
हौं पतित अपराध पूरण जरयो कर्म विकार।
काम क्रोध अरु लोभ चितवन नाथ तुमहिं विसार॥
उचित आपनि कृपा करिहौ तबै तौ बनि जाय।
सोइ करहु जो चरण सेवे सूर जूठनि खाय॥

सूरदास।

स्थायी

+			२	३	+			२	३
								ध प मंप मे ऽ	म ध प री ऽ
प म	– ऽ	र न	र स र ग ति	स स वृ ज	प म ना	गम ऽ	म थ	ध प मंप मे ऽ	ध प री ऽ

प | | न | प | र
म म म | प प | ध प | म म र | स र म
भ ज न | वि मु | ख रु | श र ण | ना ऽ री

र
स सं ध | सं र | सन ध | मप म म |
फि र त | वि ष | य न | सा ऽ थ |

अन्तरा

\+ ० ३ + २ ३
ध र र
प — प | संसं | सस | सं न र | मंन | प
ही ऽ प | तित | अप | रा ऽ ध | पू ऽ | र

र मं प
स सं ध | प मप | ध प | म — म | प मप | ध
ज र्यो ऽ | क ऽ | मं चि | का ऽ र | मे ऽ | री

प प प
मं — म | म — | म प | म — र | सर | सं
का ऽ म | क्रो ऽ | ध रु | लो ऽ भ | रत | थ

प र मं
म — म | प मप | स न ध प म
ना ऽ थ | तु म | रिं वि सा ऽ र

नोट—शेष पद क्रमानुसार।

राग—केदारा ।

झपताल

आज ब्रजराज की देखि शोभा नई ।
गई तन भूलि सुध भई हौं बावरी ॥
अधर रंग पान मुसुक्यान जादू भरी ।
ताहु पै चित हरन दृगन के भावरी ॥
कुण्डलन की हलन छलन मन मदन को ।
चलत गज चाल रस करन को चावरी ॥
निरखि के रूपनारायण हरख्यो हिये ।
कौन से भाग्य सौं लग्यो हे दावरी ॥

—रूपनारायण ।

स्थायी

+		२			०		३		
न स	सं	स	ध	प	प ध	म	र	सर	नस
आ	ऽ	ज	बृ	ज	रा	ऽ	ज	की	ऽ
प म	—	म	प म	गम	ध प	मप	धप	सस	धप
दे	ऽ	खि	शो	ऽ	भा	ऽ	न	ई	ऽ
ध प	ध प	प	मं	गं रं	रं सं	सं	संन	ध	प
ग	ई	ऽ	त	न	भू	ऽ	लि	सु	ध

ध	ध			ग					
प	प	प	संन	रं	स	सन	सं	ध	प
छ	ल	न	म	न	म	द	न	की	ऽ
प	प		न		प				
म	म	म	ध	प	म	म	र	सर	नस
च	ल	त	ग	ज	चा	ऽ	ल	व	स
प			ध						
म	म	गम	प	प	ध	न	ध	पम	प
क	र	न	को	ऽ	चा	ऽ	व	री	ऽ

आभोग

+		२			०		३		
ध		र	रं		रं			गं	
प	प	मं	सं	सं	सं	सं	स	रं	स
नि	र	खि	के	ऽ	रू	ऽ	प	ना	ऽ
स	सं				र				
ध	ध	ध	संन	रं	सं	सं	संन	ध	प
रा	य	ए	ह	र	ख्यो	ऽ	हि	ये	ऽ
प			प		गं			र	
म	म	म	मं	म	रं	रं	संन	सं	सं
कौ	ऽ	न	से	ऽ	भा	ऽ	ग्य	सों	ऽ
ग				ध					
	मसं	ध	पम	प	ससं	धध	पप	मम	रस
		[illegible]	है	ऽ	दा	ऽ	व	री	ऽ

राग–केदारा।

मूल

पूरण ब्रम्ह बताय दियो जिन एक अखण्ड हैं व्यापक सारे।
रागरु द्वेष करे अब कौन सों जोइ है मूल सोई सब डारे॥
संशय शोक मिट्यो मन को सब तत्व विचार कर्यो निरधारे।
सुन्दर शुद्ध किये मल धोय के या गुरु को उर ध्यान हमारे॥

स्थायी

+		०		२		३		०	
सं (म)	स	स	न	ध (स)	प	मं	प	म (प)	—
पू	ऽ	र	ण	ब्र	ऽ	म्ह	ऽ	ब	ऽ
(प)	—	ध	प	म	—	म	र	स	—
ता	ऽ	य	दि	यो	ऽ	जी	ऽ	न	ऽ
स (र)	र	स	म	म (प)	—	म	—	म	ग
ए	ऽ	क	अ	ख	ऽ	ण्ड	ऽ	हैं	ऽ
प (ध)	मं	ध	प	म (प)	—	प	म	र	म
व्या	ऽ	प	क	सा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		०		२		०		३	
ध		र				र		र	
प	–	सं	सं	रं	–	स	–	सं	–
रा	ऽ	ग	रु	छे	ऽ	प	ऽ	क	ऽ
र				र		स		ध	
स	ध	सं	रं	सं	न	ध	–	प	–
रे	ऽ	अ	च	कौ	ऽ	न	ऽ	सो	ऽ
र				र				प	
म	–	र	रं	स	न	ध	प	म	–
जो	ऽ	इ	है	मू	ऽ	ल	ऽ	सो	ऽ
प				प					
म	म	ध	प	म	–	र	–	स	–
है	ऽ	स	ब	डा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ

सचारी

+		०		२		०		३	
र				प					
स	र	स	म	म	–	म	–	म	ग
सं	ऽ	श	य	शो	ऽ	क	ऽ	मी	ऽ
ध									
प	–	प	प	ध	–	प	–	प	–
ध्यो	ऽ	म	न	को	ऽ	स	ऽ	व	ऽ

र								
स	—	स	सं	ध	—	प	—	म
त	ऽ	त्व	वि	चा	ऽ	र	ऽ	क्र
प				प				र
म	—	ध	प	म	—	स	र	स
र्यो	ऽ	नि	र	धा	ऽ	रे	ऽ	ऽ

आभोग

+		०		२		०		३
ध				र				र
प	—	मं	रं	सं	—	सं	—	सं
सु	ऽ	न्द	र	शु	ऽ	द्ध	ऽ	की
र				रं				ध
स	ध	स	रं	स	न	ध	—	प
ग	ऽ	म	ल	घो	ऽ	य	ऽ	के
प								र
म	—	म	प	म	—	र	—	मं
धा	ऽ	गु	रु	को	ऽ	ठ	ऽ	र
प				प				र
म	—	ध	प	म	—	र	—	म
ध्या	ऽ	न	र	मा	ऽ	रे	ऽ	ऽ

राग—केदारा।

एकताल

भज भज मनुजारे तू कमल नयन वासुदेव प्रणत वत्सल करुणा कर भक्तन प्रति पालरे तू । जाके सुमिरन सों नित पाप हरत जनम मरत पावत पद परम उनत चतुर कहत सुलभ जुगत भज दीन दयाल रे तू ॥

स्थायी

+		०		२		०		४		०	
प	प	ध	ध	प	प	म	—	—	प	—	प
भ	ज	भ	ज	म	नु	जा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	तूं
प	प	ध	ध	प	प	म	—	रेस	रे	—	स
क	म	ल	न	य	न	वा	ऽ	सु	दे	ऽ	व
स	स	म	म	म	म	म	मग	प	—	प	प
प्र	ण	त	व	त्स	ल	क	रु	णा	ऽ	क	र
स	—	ध	ध	सं	रें	सं	संरें	ध	पम	ध	म
भ	ऽ	क्त	न	प्र	ति	पा	ऽ	ल	रे	ऽ	तू

अन्तरा

+		०		२		०		३		०	
प (म)	—	स	—	स	सं	स	स	म (म)	रं	स	म
जा	ऽ	के	ऽ	सु	मि	र	न	माँ	ऽ	नि	श
ध (स)	ध	स	सं	मं	रं	स	न	ध	प	म	म
पा	ऽ	प	ह	र	त	ज	न	म	ट	र	श
म (ग)	—	प	प	ध	प	म (ग)	मग	र	स	र	स
पा	ऽ	व	त	प	द	प	र	म	उ	न	म
स (म)	स	म (म)	म	म	मग	म	म	गम	प	प	प
च	तु	र	क	ह	त	सु	ल	भ	जु	ग	ल
स (प)	स	ध (मं)	—	सं	र	स	न	ध	पम	ध	म
भ	ज	ही	ऽ	न	द	या	ऽ	ल	रे	ऽ	तूं

राग-केदारा।

चौताला

जेहि करहु दया भवानि सोइ पावे तव गुण अपार को वरणि सकत।
अलख अगम महिमा अनत श्रुति शेष सहस मुख गाइ थकत॥
जगत जननि जग वर्दनि रक्षा भवपे करति आनंद विलसत।
सब असुर संघारि धारि मुंडमाल हिये सदाहो जनन पर कृपा करत॥

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
						ध	प	म	र	स	स
						जे	हि	क	र	हु	द
म	–	मग	प	–	प	प	धप	म	–	म	ग
या	ऽ	भ	वा	ऽ	नि	सो	इ	पा	ऽ	वे	ऽ
प	ध	प	सं	सं	र	सं	ध	प	प	ध	प
त	व	ऽ	गु	ण	अ	पा	ऽ	र	को	ऽ	ऽ
प	ध	सं	म	म	म						
व	र	णि	स	क	त						

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
प	ध	प	सं	–	सं	स	सं	–	सं	सं	न
अ	ल	ऽ	ख	ऽ	अ	ग	म	ऽ	म	रि	ऽ
सं	ध	स	स	र	सं	न	सं	ध	ध	प	–
मा	ऽ	अ	न	ऽ	न्त	ऽ	ऽ	श्रु	ऽ	ति	–
सं	मं	म	रं	–	स	सं	सं	ध	ध	सन	रं
शे	ऽ	ऽ	प	ऽ	स	ह	स	ऽ।	मु	ख	ऽ
सं	न	ध	प	म	म						
गा	ऽ	इ	थ	क	त						

संचारी

+		०		२		०		३			
स	म	म	म	म	म	म	म	मग	प	ध	प
ज	ऽ	क्त	ज	न	नि	ज	ग	ष	ऽ	द	नि
प	–	संध	स	म	सं	रं	स	–	ध	प	म
र	ऽ	त्ता	ऽ	ऽ	स	य	पै	ऽ	क	र	ति
म	–	–	मग	प	प	म	म	र	स	र	म
सा	ऽ	ऽ	न	ऽ	द	वि	ल	ऽ	स	ऽ	न

आभोग

+		०		२		०		३		४	
प	ध	प	सं	स	स	स	ध	सं	सं	सं	सं
स	व	ऽ	अ	सु	र	स	ऽ	ऽ	घा	ऽ	रि
सं	ध	ध	म	सं	रं	स	नस	ध	प	म	म
धा	ऽ	रि	मु	ऽ	न्ड	मा	ऽ	ल	हि	ये	ऽ
म	म	म	मं	र	सं	सं	स	ध	ध	सन	रं
स	दा	ऽ	हि	ऽ	ज	न	न	ऽ	प	र	ऽ
स	म	ध	प	म	म						
कृ	पा	ऽ	क	र	ति						

राग–केदारा।

धमार

आज मोसे हारी खेलन आयो सरस वनचारी।
बृज की सखी सब खेलन आई ढीठ लँगरवा दे गयो गारी॥

स्थायी

–				२				३			
								ग			
								म	मग	प	प
								आ	ज	मो	से

ध – – प –	– प(मं) प प(ध) –	म – म –
हो ऽ ऽ री ऽ	ऽ खे ल न ऽ	आ ऽ यो ऽ
म(ग) प(मं) – प(ध) प	म(म) म स र स	
स र ऽ स ऽ	ब न वा ऽ रि	

अन्तरा

+	२	३
प(मं) प – स –	– म मं – –	सं(म) र सं –
वृ ज ऽ की ऽ	ऽ स खी ऽ ऽ	म ऽ ह ऽ
स – ध मं –	र – म(ग) – न	ध(मं) – प –
खे ऽ ऽ ल ऽ	न ऽ आ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
स म गं म रं	– सं(ग) सं ध म र	मं न ध प
ढी ऽ ऽ ठ ऽ	ऽ ल ग र ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
प(मं) न ध स –	मं र मं न ग	प म प प
दे ऽ ऽ ऽ ऽ	ग यो गा ऽ रि	आ ज मां गे

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

पंचम किरण

राग—कामोद।

ध्यान

पीतं वसाना वसनं सुकेशी वने रुदन्ती पिकनादद्ना।
विलोकयन्ती विदिशोऽतिभीता कामोदिका कान्तमनुस्मरन्ती॥

—संगीत दर्पणम्।

लक्षण

कामोदो भातियुक्त किलरिगधनिभिस्तीव्रकैर्मध्यमेन।
वादी चात्र प्रसिद्ध प्रविलसति सदा पंचमोऽरिरत्वमात्य॥
स्तोकोऽमुष्मिन्निषाद प्रकटयतिरुचिं धक गभ्रावरोहे।
सानंदं पूर्वयामे निशि विबुधजनैर्गीयतेमञ्जुकंठ॥

—राग कल्पद्रुमांकुर।

द्विमध्यमश्चान्यतीव्रो ग वक्रोऽत्र निषाद ।
पाशश्चर्षभ सम्वादी कामोदो निशिगीयते ॥
—राग चन्द्रिका

द्वै मध्यम तीखे सबहि उतर वक्र ग होई ।
परिवादी संवादि जहा, कामोद कहो सोई ॥
—राग चन्द्रिका सार।

नोट—यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है । इसमें दोनों मध्यम लगते हैं। वादी पंचम और संवादी रिषभ है । इसमें—गांधार और निषाद वक्र है, इसलिये यह षाडव-सम्पूर्ण है । रात्रि के प्रथम प्रहर में यह राग गाया जाता है।

आरोह-अवरोह

सर, पमंप, नधसं—स नधप, मंपधप, गमप, गमरस ।

पकड़

र, प, मंप, धप, गमप, गमरस ।

अलाप

(१) स म र म स र स म ध प-म र-म-समर प-ग म प म-र स।

(२) ममरप-मंप-मंप ध-प-गमप-म-र म-सर-स ।

(३) म र प मं ध-प-म र प-मं पध-प सं-ध प ग म प म-र स।

(४) प प मं स र-सं-मंध-प-रंरं-संनध-प-मरपम प ग म र-स।

(५) प मं प-मं ध पमं न सं र-सं म रं पं म रं मं मं रं म मं-ध-प ग म प-म र म-स र-स।

राग—कामोद, झपताल।

लक्षण गीत

ामोद की जान कल्याण सुरमेल मध्यम जुगल मान।
प कहत समवादि गनि अल्प पर मान प्रथम प्रहर को निशि मानत चतुर गान॥

स्थायी

+		२			०		३		
प	–	ध	–	प	प	–	म	–	म
का	ऽ	मो	ऽ	द	की	ऽ	जा	ऽ	न
ग					ग				
म	–	ध	–	प	म	स	र	–	स
क	ऽ	ल्या	ऽ	ण	सु	र	मे	ऽ	ल
ग					ग				
प	र	प	ध	प	म	स	र	–	स
म	ऽ	ध्य	म	जु	ग	ल	मा	ऽ	न

अन्तरा

+		ॅ			०		३		
प	प	सं	सं	मं	स	र	स	–	स
रि	प	क	ह	त	स	म	वा	ऽ	दि
स	स	र	–	सं	र	ग	ध	–	प
ग	नि	अ	ऽ	ल्प	प	र	मा	ऽ	न
ग					प				
म	म	प	–	प	स	मं	स	ध	प
प्र	थ	म	ऽ	प्र	ह	र	को	नि	शि
मं					ग				
प	–	ध	ध	प	म	म	र	–	स
मा	ऽ	न	त	च	तु	र	गा	ऽ	न

राग—कामोद ।

त्रिताल

प्रभु मेरे अवगुन चित ना धरो ।
समदरसी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब दोउ मिलि एक बरन भइ सुरसरि नाम परयो ॥
एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो।
सो दुविधा पारस नहीं राखत कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रम जाल कहावे सूरदास सगरो ।
कै याको निरवार करो प्रभु नहिं प्रण जात टरयो ॥

—सूरदास

स्थायी

+	२	०	३
	ग म ध प	ग म प ग	म र म स
	प्र भु मे रे	अ व गु न	चि त ना ध
मर प — प	ग म ध प	ध ध प प	म — र स
रो ऽ ऽ ऽ	प्र भु मे रे	स म द र	सी ऽ है ऽ
सन र स स	ध — प —	म — र स	मप ध प ग
ना ऽ म ति	हा ऽ रो ऽ	चा ऽ हो तो	पा ऽ र क
मग धप मप धप			
रो ऽ ऽ ऽ			

अन्तरा

+	२	०	३
	प ग म ध प	प प प प	सं – सं सं
	प्र भु मे रे	ए क न दि	या ऽ ए क
र स – सं र	सध सं मं स	सं रं गं मं	रं – सं सं
ना ऽ र क	शा ऽ व त	मै ऽ लो ऽ	नी ऽ र भ
धन संरं संन धप	गम पप गम रस	पं गं मं पं गं	मं र सं सं
रो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ज य दो ऽ	उ ऽ मि लि
मं ध न सं रं	संन म ध प	स स म र	पमं ध प प
ए ऽ क व	र न भ इ	सु र स रि	ना ऽ म प
स न ध प			
रो ऽ ऽ ऽ			

नाट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग—कामोद।

त्रिताल

भज मन राम चरण सुख दाई।
जहि चरणन त सुरसरि निकली शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई॥
जेहि चरनन के चरन पादुका भरत रह्यो लपलाई।
सोइ चरण केवट धो लीन तब हरि नाव चढ़ाई॥
सोइ चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुख दाई।
सोइ चरण गौतम ऋषि नारी परस परम पद पाई॥
दंडक वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोइ प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई॥
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जै छत्र धराई।
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर परसत लंका पाई॥
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई।
तुलसिदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥

—तुलसीदास।

स्थायी

+				५				०				३			
				म	प	मंध	मंध	मग	प	र	र	गग	र	गग	म
				भ	ज	म	न	रा	ऽ	म	च	र	न	सु	ख
मर	प	धप	मंप												
दा	ऽ	ई	ऽ												

अन्तरा

+	२	०	३
	म प मध मप	पम प संन सं	नस रं संन सं
	भ ज म न	जे हि च र	ण न से ऽ
सध ध संन रं	सन सं धप मप	ध नध पध मप	मर पम पध मप
सु र स रि	नि क लीं ऽ	शं ऽ क र	ज टा ऽ स
गम रर सर नस	नस मर पध मप	प सं स रं	सन स मरं पं
मा ऽ ई ऽ	भ ज म न	ज टा ऽ शं	ऽ क री ऽ
मंग म रं रं	संन सं ध प	सं संर संन सं	ध नध पम प
ना ऽ म प	रयो ऽ है ऽ	त्रि भु व न	ता ऽ र न
गम पग मर नस			
आ ऽ ई ऽ			

राग—कामोद ।

तेवड़ा

नीरज नील छवि तनु श्याम ।
शरद शशि मुखकोर नासा मृग नयन अभिराम ।
भौंह धनु अरु अधर विम्बा कम्बु कंठ विशाल ॥
वृषभ लक्षन हाथ पल्लव भुजा मनहुँ मृणाल ॥
चरण कोमल जलज मुनि मन मधुप सुखमा धाम ।
रोम रोमहिं वारिये भृगु अकथ छिन छिन श्याम ॥

—मृगुनाथ

स्थायी

+	२	३	+	०	३
	पमं प	ध प	मग म र	सा र	सग म
	नी ऽ	र ज	नी ऽ ल	छ वि	त नु
मग प प	पमं प	ध प	पमं प ध	पमं प	मग म
श्या ऽ म	नी ऽ	र ज	श र द	श शि	मु ख
मग मग प	मग म	सग म	मग म र	प मं	ध प
को ऽ र	ना ऽ	सा ऽ	मृ ग न	य न	अ भि
मंमं धप मग					
रा ऽ म					

अन्तरा

	+	०	३	+	०	३
	पम प	ध प	पम प प	सन सं	स सं
	नी ऽ	र ज	भौं ऽ ह	ध नु	अ रु
संध मं रं	संन सं	ध प	पम प ध	पम प	मग म
अ र्ध र	वि ऽ	न्या ऽ	क ऽ न्धु	कं ऽ	ठ वि
र सन स	सध र	सन स	मग पं पं	मगं मं	रं सं
शा ऽ ल	नी ऽ	र ज	धृ प भ	ल ऽ	च न
संध सं रं	संन स	ध प	गम प प	संन धप	मप धप
हा ऽ थ	प ऽ	ल्ल व	भु जा ऽ	म न	हुँ मृ
गम रस नस					
दु ऽ ल					

नाट – शेष पद अन्तरानुसार।

राग–कामोद ।

झपताल

श्राज नन्दलाल मुख चन्द्र नयनन निरखि,
परम मगल भयो भवन मेरे ।
कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र करि,
वारो तवहीं जरहि नेक हेरे ।
सकल सुख सदन हर्षित वदन गोपवर,
प्रबल दल मदन जनु संग घेरे ।
कहो कोऊ कैसे हुँ नाहिं सुधिबुधि रहे ,
गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥

—गदाधरमिश्र।

स्थायी

+		२			०		३		
प						प			
मग	म	र	पध	मंप	मग	म	र	गम	स
आ	ऽ	ज	न	न्द	ला	ऽ	ल	मु	म
ग				ध					
र	—	र	मर	प	गमं	प	ध	पध	सं
च	ऽ	न्द्र	न	य	न	न	नि	र	खि
प			म						
प	प	मंप	ध	प	म	गम	र	गम	म
प	र	म	मं	ऽ	ग	ल	भ	यो	ऽ

नस	मर	मग	पम	धप	सन	धप	मप	गम	रस
भ	व	न	मे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		२			०		३		
प	प	सं	सं	स	सं	संन	रं	स	सं
को	ऽ	टि	क	ऽ	द	ऽ	पै	ला	ऽ
सं	ध	स	सं	सं	सन	र	नसं	ध	प
च	ऽ	एय	ए	ऽ	क	ऽ	त्र	क	रि
प	मप	मप	ध	प	म	गम	रस	ध	प
वा	ऽ	रों	त	घ	रीं	ऽ	ज	व	हि
स	नस	रस	मर	मग	पम	धप	मप	गम	रस
ने	ऽ	क	हे	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

सचारी

+		२			०		३		
सन	म	म	मर	प	प	पम	प	ध	प
स	क	ल	सु	ख	स	द	न	ह	ऽ

राग–कामोद ।

सूल

पिया प्यारी नाचेरी रास मडल मध ललिता उघटत सगीत
त्ताधुमकिट ध्रग्रेना थोधिधिगनधा ॥ उरपति रपगत भेद वतावत मृदग
जावत सखि धाकिटिकिटि धुमकिटिधेत्ता ताताधिधिगन धा ॥ मधुर
धुर नूपुर धुनि वाजत कुन्डल किंकिनि झननन अद्भुत कामोद की तान
ावत ॥ प्यारी को रिझावत वलिवलि आवत रसिक गोविन्द अभिराम ॥

स्थायी

+		०		२		३		०	
				सन	स	र	पमं	प	प
				पि	या	प्या	ऽ	री	ऽ
ध	ध	न	प	मं	प	म	ग	म	र
ना	ऽ	ऽ	चे	री	ऽ	रा	ऽ	ऽ	स
र	ग	म	प	म	ग	म	र	स	स
म	ऽ	न्ड	ल	म	ध	ल	लि	ता	ऽ
मन	र	स	स	स	ध	ऩ	ध़	प	प
उ	घ	ट	त	सं	ऽ	ऽ	गी	ऽ	त

प म गर गर गग र प प पम स
त त्ता धुम किट धेग ना गे त्ता धाँ ऽ

धध पप म गग
धिधि गन धा ऽ

अन्तरा

+ ० २ ३ ०
प प नध न सं सं सं सं न सं
उ र प ति र प ग त ऽ ऽ

ध न सं रं स सं ध न ध प
धे ऽ द ध ता ऽ ऽ ऽ ध न

न ध न प म प म ग म र
मृ द ग ध जा ऽ ध त स नि

प पप पप नध गन मग सं म म म
धा किट किट धुम किट किट घे त्ता ता ता

मंमं पप	म गर			
धिधि गन	धा ऽ			

संचारी

+	०	२	३	०
र र	प प	प प	ध ध	न प
म धु	र म	धु र	नू ऽ	पु र
मं प	म ग	म र	र प	मं प
धु न	धा ऽ	ज त	कु ऽ	ड ल
मंप ध	मं प	म ग	ग म	र स
किं ऽ	कि नि	झ न	ऽ ऽ	न न
न र	स स	स स	धृ नृ	प प
अ द	भु त	का मो	ऽ ऽ	द कि
प स	र र	गम प	ग म	र स
ता ऽ	ऽ न	गा ऽ	ऽ ऽ	व त

आभोग

+	०	२	३	०
प प	नधन	सं स	न म	सं सं
प्याऽ	रीको	रिझा	ऽ ऽ	व त

ध न	स रं	स म	ध न	प प
व लि	व लि	आ ऽ	ऽ ऽ	ध त
प र	म स	नसं ध	न प	मं प
र सि	क गो	वि ऽ	ऽ न्द	अ भि
म ग	म र -			
रा ऽ	म ऽ			

राग—कामोद-चौताला ।

यह छवि स्तुति कहि न जात जगत अम्ब नरेश कुँवरलाल अलक जात सकुचि । चन्द्र मंद दिन मलीन होत होत सकलंकी ताको उपमा देत हारि चतुर सुकवि । अनगन गुण लगे मातु एक रूप अनूप तुहिं यह प्रमान पावत हैं छिन थिर न रहत है रवि ॥ शोभित मंदिर मध्य भामर गत ज्योति उदय रति का न रहा रति अनंग छवि ॥

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
						मग	प	ग	र	म	म
						य	ह	छ	वि	स्तु	ति
र	र	र	मग	प	प	प	पग	प	मग	म	र
क	हि	न	जा	ऽ	त	ज	ग	त	अ	ऽ	म्ब

प	प	स	सं	न	रं	सन	सं	ध	ध	पम	प
च	ऽ	म्पा	ऽ	कु	म्हि	ला	ऽ	त	ज	ल	ज
मग	मग	म	ध	मं	प						
जा	ऽ	त	स	कु	चि						

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
पम	ध	प	स	सं	संन	स	सं	रं	संन	सं	स
च	ऽ	न्द	म	ऽ	द	दि	न	म	ली	ऽ	न
मं	सं	सं	मर	प	म	गं	रं	संन	र	नस	ध
दी	ऽ	न	ही	ऽ	न	स	क	ल	ऽ	की	ऽ
प	प	ध	ध	ग	म	प	ध	प	सं	सन	र
ता	ऽ	को	उ	प	मा	कै	ऽ	से	दे	ऽ	रिं
सं	नम	ध	प	मग	प						
च	तु	र	सु	क	वि						

सचारी

+		०		२		०		३		४	
म	ग	प	मं	प	प	ध	ध	प	पम	प	प
अ	न	ग	न	गु	ण	ते	ऽ	रो	मा	ऽ	तु

पम	ध	प	सं	संन	र	स	नम	ध	ध	पम	प
गं	ऽ	क	रू	ऽ	प	अ	ने	क	तृ	ऽ	हि
म	प	प	मग	प	प	मग	मग	न	र	म	म
ध	ह	प्र	मा	ऽ	न	पा	ऽ	ध	त	है	ऽ
गन	र	म	मग	मग	प	ध	धप	प	मग	गं	प
छि	न	थि	र	न	र	ह	त	है	ऽ	र	चि

आभोग

+		०		२		०		३		४	
पम	ध	प	म	स	म	सं	स	म	म	म	सं
शो	ऽ	भि	त	म	ऽ	दि	र	ऽ	म	ऽ	ध्य
मर	प	मग	म	र	स	संन	र	संन	म	ध	प
आ	ऽ	न	द	म	नु	ज्यो	ऽ	ति	उ	द	य
प	ध	—	मग	म	ग	प	ध	प	स	संन	र
र	ति	ऽ	फो	ऽ	न	र	गो	ऽ	र	ति	अ
स	नसं	ध	प	मग	प						
न	ऽ	ग	हूँ	द	चि						

राग—कामोद।

धमार

सखी हम देखि न ऐसी निकाई।
श्यामल गात मनोहर जोटा अन्त निरचि शिल्प चतुराई॥
विष्णु चतुर्भुज विधि चतुरानन पचानन भील भयदाई।
नहिं देखी न सुनि कतहूँ भृगु सुरनर मुनि महँ सुन्दरताई॥

—भृगुनाथ।

स्थायी

+					२					३			
म			प			म				म			
र	प	–	म	प	ध	प	ग	म	प	ग	म	र	स
स	खी	ऽ	ह	ऽ	म	ऽ	दे	ऽ	ऽ	खी	ऽ	न	ऽ
सन	स	म	मग	प	मप	ध	सन	धप	मप	गम	पग	मर	स
ऐ	ऽ	ऽ	सी	ऽ	नी	ऽ	का	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+					२					३			
ध			र							रं			
प	–	–	सं	–	सं	–	संन	र	–	सं	–	मं	–
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	ल	ऽ	गौ	ऽ	ऽ	र	ऽ	म	ऽ

र   र र
सध – संन मं   रं – सनम   ध प मं प
नोऽऽर ऽ   रऽजोऽऽ   दाऽ ऽ ऽ

म
प र – म –   ग म रं सरं   स न ध प
अऽ ऽन्त ऽ   विऽरं ऽऽ   णिऽशि ऽ

प   प
म प – ध –   प – धन संन धप   गम पग मग म
ऽग्पऽ च ऽ   तुऽराऽऽ   हैऽ ऽ ऽ

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

षष्ठ किरण

राग—छायानट।

ध्यान

कर्णाटस्यप्रमेलप्रकटित सुतनुस्त्वादिमध्यातषड्ज ।
कण्ठे हार सरत्न सितवसनरुचि पाटलोष्णीषधारी ॥
गौराङ्गो रक्तनेत्र सहचर चटुभिर्वीर शृंगारजन्य ।
छायानाटो दिनान्ते प्रहसति पथिकान् पुष्पसत्कन्दुहस्त ॥

—संगीत दर्पणम्।

ह्रिमस्तोमेतर पाशो रिसंवादी गयग्रक ।
निषादहीन आरोहे छायानाटो निशि स्मृत ॥

—राग चन्द्रिकायाम्।

राग–छायानट, त्रिताल ।

लक्षण गीत

सब कोई रीझत छायानट पर,
शंकर भूखन मेल मिलावत,
रीषब होत प्रधान मान सुर,
आरोहन में सप्तम बरजत,
अवरोहन में तृतिय छिपावत,
धैवत ग्रह और न्यास सु पंचम,
पंचम रीषब संग कहे चतुर ॥

स्थायी

+	२	०	३
न सं नसं ध प	प र ध र ग गम प	ग म गम र स	– रस स
स ब को ई	री ऽ झ त	छा ऽ या न	ऽ ट प र
न स – ग ग	ग म र स स	स – र स	स ध न प
श ऽ क र	भू ऽ ष न	मे ऽ ल मि	ला ऽ व त
प – र र	र गर गम प	म गम र स	– र स स
री ऽ प ब	हो ऽ त प्र	धा ऽ न मा	ऽ न सु र

दुर्योधन को मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाए ॥
इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर छिन मों वारि बहाये ।
गोवर्धन स्वामी नख पर लीनों इन्द्र को मान घटाए ॥
अर्जुन के सार्थ रथ हाँक्यो महाभारत में गाए ।
भारत में मँचरी के अंडा घंटा तोर बचाए ॥
ले प्रह्लाद खम से बाँध्यो राजन त्रास दिखाये ।
जन अपने की प्रतीक्षा राखी नरसिंह रूप बनाये ॥
छोरे न छुटे सिया जी के कगना कैसे चाप चढ़ाये ।
कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥
जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ तहँ होत सहाए ।
तुलसीदास सेवक रघुनन्दन आनन्द मंगल गाए ॥

—तुलसीदास ।

स्थायी

+	२	०	३
सन सं ध प	गर ग म धप	मग म र स	म र मन स
ग ज को ऽ	फं ऽ द छु	ड़ा ऽ ये ना	ऽ थ कै मे
मन स प़ र	ग र गर ग	म म प मग	म र सन म
हँ सि पू ऽ	छै ज न क	पु र की ना	ऽ रि ते रो
प़ र र र	गर ग गम धप	मग म र स	– र मन म
य ह अ च	र ज म न	भा ऽ ये ना	ऽ थ कै मे

अन्तरा

+	२	०	३
प प स मं	सन रं मं म	ध न स र	मन स ध प
ग ज औ र	आ ऽ ए ल	रैं ऽ ज ल	भी ऽ त र
मप ध पम प	र ग म प	मग मम गग मम	रग मप मप सं
दा ऽ रु ण	ठं ऽ दृ म	चा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ये
मंन सं ध प	प रं र र	गंरं गं मं प	मगं म रं म
ग ज की ऽ	टे ऽ र सु	न्यो ऽ र घु	न ऽ न्द न
ध नध म र	सन सं ध प	र ग म प	मग म र स
ग रु रु ड़ो	ऽ ड़ उठि	धा ऽ ये ना	ऽ थ के से

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

राग—छायानट ।

तेवड़ा

है हरि भजन को परवान ।
नीच पाये ऊँच पदवी बाजते निशान ।
भजन को परताप ऐसो जल तरे पाषान ॥
अजामिल अरु भील गणिका चढे जात विमान ।
चलत तारे सकल मडल चलत शशि अरु भान ॥
भक्त ध्रुव को अटल पदवी राम को दिवान ।
निगम जाको सुयश गावत सुनत संत सुजान ।
सूर हरि को शरण आयो राखिले भगवान ॥

—सूरदास ।

स्थायी

+	२	३	+	॰	३
	सन र	सन स	स सं धप	र ग	गम धप
	है ऽ	ह रि	भ ज न	को ऽ	प र
मग म र	सन र	सन स	सन र र	सन स	ध प
वा ऽ न	है ऽ	ह रि	नी ऽ च	पा ऽ	ये ऽ
प र र	ग म	धप मंप	सं – धप	र ग	म धप
ऊँ ऽ च	प द	वी ऽ	बा ऽ ज	ते ऽ	नी ऽ
मग म र					
शा ऽ न					

राग—छायानट ।

झपताल

मदन मन मोहन मुरारी न आयेरी-
आलि निशि बीतत न देखे पिया लागे तन-
जलत मदनानल में कैसे निवारूँगी-
एक तो नव योवन वैरी घनो पिया-
देखे तुम शमन परे, देह मन डारूँगी ॥

स्थायी

+		२			०		३		
सं	सं	सं	स	सं	ध	न	ध	प	प
म	द	न	म	न	मो	ऽ	ह	न	मु
र	ग	ग	म	प	म	ग	म	प	प
रा	ऽ	री	ऽ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	रि
म	प	प	मं	प	म	गम	र	स	स
आ	ऽ	लि	नि	शि	बी	त	त	न	ऽ
म	म	र	स	स	स	ऩ	म	ध	प़
दे	ऽ	खे	पि	या	ला	ऽ	गे	त	न
प	र	र	र	र	र	ग	म	प	प
ज	ल	त	म	द	ना	ऽ	न	ल	में

प	प	म	पध	प	मग	म	र	म	म
कै	ऽ	से	ऽ	नि	घा	ऽ	रूँ	ऽ	गी

अन्तरा

+		२			०		३		
प	प	प	न	न	म	म	सं	सं	स
ए	क	तो	न	व	यो	ऽ	व	ऽ	न
र	ग	म	म	पं	मंगं	मं	रं	सं	स
पै	ऽ	री	ऽ	य	नी	ऽ	पि	या	ऽ
मं	गं	म	र	गन	ध	न	न	सं	र
दे	ऽ	मे	तु	म	श	म	न	प	रं
म	म	स	ध	प	म	गन	र	म	म
दे	ऽ	र	म	न	डा	ऽ	रूँ	ऽ	गी

राग—छायानट ।

ख़्याल

शम्भू शिव महेश आदि त्रिलोचन भव भय हर भवेश,
दीन नाथ दानव दलन दिनेश्वर ।
जटा जूट पिनाकि भस्म रुंड माला
गरल गरे धर हर ओढे बाघम्बर,
नाचत चन्द्र भाल बव बव घन घन बाजे
अति अपूर्व हर गुण गावत त्रिपुरेश्वर ।
वीर चन्द्र नरपति प्रकाश कर नाथ सों
अधरधरे स्वमधुरतान साचे सुन्दर ॥
—वीर चन्द्र ।

स्थायी

+		०		२		३		०	
सं	—	सं	—	ध	न	ध	प	मं	प
श	ऽ	म्भू	ऽ	शि	व	म	हे	ऽ	श
र	ग	म	प	म	ग	म	—	र	स
आ	ऽ	दि	त्रि	लो	ऽ	ऽ	ऽ	च	न
स	स	र	र	स	स	म	ध	—	प
भ	व	भ	य	ह	र	भ	वे	ऽ	श

प र	र र	— र	र ग	म प
दी ऽ	न ना	ऽ घ	दा ऽ	न म
ध न	ध प	म ग	म —	र म
द ल	न दि	ने ऽ	ऽ ऽ	स्व र

अन्तरा

+	०	२	३	०
प प	— मं	— म	स स	— स
ज टा	ऽ जू	ऽ ट	पि ना	ऽ कि
स —	स न	— न	ध र	रं —
भ ऽ	स्म सं	ऽ ह	मा ऽ	ला ऽ
ग मं	ग र	स न	ध न	स रं
ग र	ला ग	रें ऽ	प र	ह र
स न	ध —	प —	गग म	र म
ओ ऽ	ई ऽ	धा ऽ	घ ऽ	स्व र

सञ्चारी

+	०	२	३	०
स —	म ग	प प	ध मं	ध प
ना ऽ	ग म	च न्द्र	मा ऽ	ऽ म

प	–	सं	ध	ध	ध	प	प	प	प
यं	ऽ	य	ऽ	घ	न	घ	न	बा	जे

प	प	प	प	र	र	र	ग	म	प
अ	ति	अ	पू	ऽ	र्वे	ह	र	गु	ण

र	ग	म	प	ध	प	मग	म	र	स
गा	ऽ	व	त	त्रि	पु	रे	ऽ	श्व	र

आभोग

+		०		२		३		०	
प	–	प	सं	–	स	स	सं	स	स
धी	ऽ	र	च	ऽ	न्द्र	न	र	प	ति
सं	र	–	रं	गं	मं	ग	र	गं	स
प्र	का	ऽ	श	क	र	ना	ऽ	थ	सों
म	र	सं	स	म	ध	ध	प	प	र
अ	ध	र	ध	रे	ऽ	सु	म	धु	र
र	ग	म	प	ध	प	मग	म	र	स
ता	ऽ	ऽ	न	सा	धे	सु	ऽ	न्द	र

— सं	म प	— न	ध —	प र	ग म
ऽ श्रं	ऽ ग	ऽ व्या	ऽ ऽ	ल ल	प ऽ
प मग	म रस	र स			
ऽ टा	ऽ य	ऽ के			

अन्तरा

+	०	२	०	३	४
म प	— पमं	ध प	न स	सं संन	रं स
ग रे	ऽ तुं	ऽ ड	मा ऽ	ल कं	ऽ ठ
सं मं	स ध	न रं	सन रं	सं स	ध प
ऽ का	ल ह	ऽ को	का ऽ	ल शी	ऽ श
प र	— गं	म पं	मग मं	रं सन	र स
ऽ मो	ऽ ह	त ऽ	है ऽ	ऽ मा	ऽ ल
— ध	न रं	म —	ध प	र ग	म प
ऽ री	ऽ ऽ	झे ऽ	ऽ ढ	म रू	ऽ प
म ग	म र	— स			
जा ऽ	ऽ य	ऽ के			

सं	–	–	सं	ध	न	रं	सं	–	ध	–	प
ति	ऽ	ऽ	स	हि	त	ऽ	दे	ऽ	के	ऽ	सो
धप	प	–	गं	मं	र	–	सं	–	ध	न	सं
ऽ	क	ऽ	रे	ऽ	में	ऽ	श	ऽ	क	र	स
स	ध	–	प	–	ध	प	–	र	ग	म	प
हा	ऽ	ऽ	य	ऽ	क	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	म	र	–	स						
आ	ऽ	ऽ	य	ऽ	के						

राग–छायानट ।

धमार

परी मतवारो ठाढ़ो घाट माँझ ।
कठिन भयो घर जानारो सजनी, जिया कापत ज्यों ज्यों पडत साँझ ।

स्थायी

+		२		३			
				स	गर	न	स
				ए	री	म	त

म गर – ग म | प – घ ग प | म ग म र
था ऽ ऽ रो ऽ | ऽ ऽ ठा ऽ ऽ | ढो ऽ ऽ ऽ

र ग र ग म | घग मग म र – |
मा ऽ ऽ ट ऽ | ऽ मों ऽ भ ऽ |

अन्तरा

+	२	३
प प – मध न	मं र सम –	म – म –
फ टि ऽ न ऽ	ऽ भ यो ऽ ऽ	घ ऽ र ऽ
म घ – मंर म	र – संन स –	ध न प –
जा ऽ ऽ नो ऽ	री ऽ म ज ऽ	नी ऽ ऽ ऽ
पम प प ध न	म र सं न म	ग – प र
जि गा ऽ फा ऽ	ऽ ऽ प म ऽ	ज्यों ऽ ज्यों ऽ
र ग र ग म	प मग म र –	
प ड़ ऽ म ऽ	ऽ मों ऽ भ ऽ	

श्री सरस्वत्यै नम.

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

सप्तम किरण

राग–गौडसारंग ।

ध्यान

वीणा विनोदी दृढ-बद्ध वेणी कटयन्तरा संस्थित-गौर गात्र ।
तृतीय-यामे पिकनाद तुल्य सारंगगौड कथितो मुनीन्द्रै ॥

—संगीत दर्पणम् ।

लक्षण

सारंगो गौडपूर्वो द्विम इति विदितोऽप्यंस्तु तीव्रं स्पत ।
प्राय सर्वोऽपि धर्मो निरति विरत प्रयात्र संदृश्यतेऽसौ ॥
गान्धारा धैवतश्च प्रविलसत उभौ यादिमौ यादिरूपौ ।
केऽप्याहुर्वैपरीत्यं समयविद उताधस्तिरं गीयतेऽद्य ॥

—राग कल्पद्रुमाङ्कुर ।

अलाप

(१) सगरमगपमधपस - धपमगरमग - मरस।

(२) नसगरमग - मर - स सगरमग - प - मधमप - म
ग - रमगमरस - ।

(३) मगप - ध - पमधमप - मगमरमग - मर - स।

(४) नसमगप - पध - प स - सरंन सं - धप - म - धप
धप - मधमपमगरमम - मगमरस।

(५) मगपम ध - प - ससंर - सं - धसं - धपधप - मगर
मग - सं - धपमगरमग - मर - स।

(६) पपससंर - संगरमग - मर - ससर - सं - पम -
धप - मपमग - मर - स।

राग—गौड़सारंग-सूल।

लक्षण गीत

मारग गौड़ कहत मेल कल्याणी मत
सपूरन अरुधक मध्यम युग अभिमत।
दिन के दूजे याम गुनि जन करत गान
सादिक कहे रसिक रूपक चतुर सुमत॥

स्थायी

+		०		२		३		०	
ग म	गर	स	स	स	—	ग	र	ग म	ग
सा	ऽ	र	ग	गौ	ऽ	ड़	क	ह	त
न स	मग	प	प	प प	—	म	गर	म	ग
मे	ऽ	ल	क	ल्या	ऽ	णी	ऽ	म	त
ग म	—	प	—	प मं	रं	सं	न ध	न	प
सं	ऽ	पू	ऽ	र	न	क	ध	ऽ	क
म प	—	ध	प	प धप	पमग	म	गरे	गम	प
म	ऽ	ध्य	म	यु	ग	अ	भि	म	त

अन्तरा

+		०		२		३		०	
प	प	सं	–	स	–	सं	स	र	सं
दि	न	के	ऽ	दू	ऽ	जे	था	ऽ	म
प	न	स	रं	संन	धप	मग	मर	म	ग
गु	नि	ज	न	क	र	त	गा	ऽ	न
स	–	(स)म	ग	प	प	–	रं	सं	सं
सा	ऽ	दि	क	क	हे	ऽ	र	सि	क
प	सं	ध	प	(ग)म	ग	म	र	गम	प
रू	ऽ	प	क	च	तु	र	सु	म	त

राग–गौडसारंग।

त्रिताल

मेरो मन नन्दलाल सो अटको।
मन थम गयो आली श्याम सुंदर को मोरमुकुट को लटको॥
मीरानो सी फिरत कुंजन में सुध नहिं घूंघट पटको।
मन रंग मन हर ले गयो मेरो छैला नागर नटको॥

स्थायी

+	२	०	३
	म म		
	ग म ध प	ग म र स	– र स –
	मे रो म न	नं ऽ द ला	ऽ ल मो ऽ
	म म	ग	
मप मप म ग	ग म ध प	स स म ग	प प प; प
अ ट को ऽ	मे रो म न	म न व स	ग यो आ ली
		प	
मप धन मं ध	मं प म ग	म – प प	ध न सं न
श्या ऽ म सु	द र को ऽ	मो ऽ र मु	कु ट को ऽ
म			
ध प म ग			
ल ट को ऽ			

अन्तरा

+	२	०	३
	म म	म	
	ग म ध प	म – म ग	प – प –
	मे रो म न	धौ ऽ रा ऽ	मी ऽ मो ऽ
म	मं मं	ग ग	
ध न मं ध	प प म ग	म म र स	म र म म
फि र त कु	ज न में ऽ	सु ध न र्हि	घ ऽ घ ट

मंप	मंप	म ग	ग	म	ध॑प	म	ग	प	प	ध	न	संसं
प	ट	को ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ	म	न	र	ग	म	न	ह र

स	–	ध	प	मंप	मंप	ग	म	स	–	मग	प	मंप	धन	संन	धप
ले	ऽ	ग	ध्यो	मे	ऽ	रो	ऽ	छै	ऽ	ला	ऽ	ना	ऽ	ग	र

मंप	मंप	म	ग
न	ट	को	ऽ

राग—गौडसारंग ।

तेवड़ा

अब के नाथ मोहिं उधारि ।
मगन हौं भव अम्बुनिधि में कृपासिन्धु मुरारि ॥
नीर अति गम्भीर माया लोभ लहर तरङ्ग ।
लिये जात अगाध जल में गहे ग्राह अनङ्ग ॥
मीन इन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार ।
पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार ॥
काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर ।
नाहिं चितवन देत तिय सुत नाम नौका ओर ॥
थक्यो बीच बिहाल बिह्वल सुनो करुणा मूल ।
श्याम भुज गहि काढि डारो सूर ब्रज के कूल ॥

—सूरदास ।

स्थायी

+			२		३		+			२		३	
										ऩ	ऩ	म	-
										ध्रु	व	के	ऽ
गर	म	ग	गम	प	मं	प	गर	म	ग	न	ऩ	म	-
ना	ऽ	थ	मो	ऽ	हि	त	बा	ऽ	र	ध्रु	व	के	ऽ
मं	प	ध	मं	प	गग	म	गर	म	ग	स	र	ऩ	स
म	ग	न	हीं	ऽ	भ	व	अ	ऽ	म्बु	नि	धि	मैं	ऽ
ग	र	म	ग	प	मं	प	गम	र	स				
कृ	पा	ऽ	सि	ऽ	न्धु	मु	रा	ऽ	रि				

अन्तरा

+			२		३		+			२		३	
मं	प	न	ध	न	स	स	स	न	सं	सं	-	सं	-
नी	ऽ	र	अ	ति	ग	ऽ	म्भी	ऽ	र	मा	ऽ	गा	ऽ
स	न	र	स	न	ध	प	मं	प	प	ग	म	ग	-
लो	ऽ	भ	ल	ह	र	त	रं	ऽ	ग	ध्रु	व	के	ऽ

प	प	–	सं –	सं सं	गं	रं म	र सं	न म
ल	ये	ऽ	जा ऽ	त श्र	गा	ऽ ध	ज ल	मे ऽ

न	ध	न	सं न	ध प	गर	म ग
ग	हे	ऽ	श्रा ऽ	ह श्र	न	ऽ ह्न

नोट—शेप पद अन्तरानुसार ।

राग–गौडसारंग ।

झपताल

देव हूँ भयेते कहा इन्द्र हूँ भयेते कहा,
विधि हूँ के लोकते बहुरि आइयत हैं ।
मानुप भयेते कहा, नृपति भयेते कहा,
द्विज हूँ भयेते कहा पार पाइयत हैं ॥
पशु हूँ भयेते कहा पक्षि हूँ भयेते कहा,
पन्नग भयेते कहा कहाँ श्रवाइयत हैं ।
छूटबे को सुन्दर उपाय एक साधु संग,
जिनकी कृपाते अति सुख पाइयत हैं ॥

स्थायी

+		२	०		३
र	ग	र गम प	म	र	स न म
टे	च	हूँ ऽ भ	ये	ऽ	ने क हा

नृ नृ	न म स	ग र	म ग –
इ न्द्र	हूँ ऽ भ	ये ते	क रा ऽ
स स	ग – म	प मं	प – ध
वि धि	हूँ ऽ के	लो क	ते ऽ थ
मं प	म ग म	र रग	म ग –
हृ रि	आ ऽ इ	य त	हैं ऽ ऽ

अन्तरा

+	२	०	३
मं प	प नध न	सं न	स सं मं
मा ऽ	नु प भ	ये ऽ	ते क रा
प –	न म र	मं न	मं ध प
भू ऽ	प ति भ	ये ते	क हा ऽ
न सं	गंरं म ग	मं रं	स न स
त्रि ज	हूँ ऽ भ	ये ते	क रा ऽ
प न	स ध प	मग र	म ग –
पा र	पा ऽ इ	य त	हैं ऽ ऽ

सचारी

+	२	०	३
प प	मं प प	ध ध	प मं प
प शु	हूँ ऽ भ	ये ते	क हा ऽ
म म	ग – ग	र र	म ग –
प क्षि	हूँ ऽ भ	ये ते	क हा ऽ
ऩ न	स गर म	प म	प म ग
प न्न	ग ऽ भ	ये ते	क हा ऽ
ध प	मं प प	मग र	म ग –
क्यों अ	घा ऽ इ	य त	हैं ऽ ऽ

आभोग

+	२	०	३
प प	म – स	म म	म र म
छु ट	वे ऽ क्यो	सु ट	र ऽ उ
म गरे	म ग ग	संन र	नसं धप मंप
पा य	ग ऽ क	सा धु	स ऽ ग

गरे	म		रं	सं	र	सं	न	स	ध	प
जि	न		की	ऽ	कृ	पा	ते	अ	ऽ	ति
ध	मं		प	मंध	मंप	मग	रस	नस	गर	मग
सु	ख		पा	ऽ	इ	य	तु	है	ऽ	ऽ

राग–गौडसारंग ।

सूल

नाम रट शंकर देव मन रे ! वृषभ वाहन,
तपसी प्रबल ईश्वर महा योग ईशान ।
गंगा धर जटाजूट, ललाट शशि सोहे,
और मगन हरि ध्यान ।
नील कंठ उर शेष, कपाल माला,
विभूति भूषण, गरल पान ।
गौरी अर्धंग, डमरू कर पिनाक पाणि,
धन धन धन महादेव, गुन सागर आगर-
गायत नामा पगार ।

—गमनौत ।

स्थायी

+		०		२		३		०	
नृ	नृ	स	म	ग	ग	ग	रे	म	ग
ना	ऽ	ऽ	म	र	ट	श	ऽ	क	र

ग	प	म॑	ध	म॑	प	म	म	ग	ग
दे	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	म	न	रे	ऽ
ग	ग	र	म	म	म	ग	ग	ग	ग
धृ	प	भ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	इ	न
ग	म॑	प	प	ध	ध	न	ध	न	स
त	प	सी	ऽ	प्र	ध	ऽ	ऽ	ऽ	ल
न	ध	न	न	ध	प	ध	प	म॑	प
ई	ऽ	ऽ	ऽ	स्व	र	म	हा	ऽ	ऽ
म	म	ग	ग	र	म	ग	ग	र	स
यो	ऽ	ग	इ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न

अन्तरा

+		०		२		३		०	
प	म॑	प	प	सं	सं	मं	सं	न	रं
ग	ऽ	द्रा	ऽ	ध	र	ज	टा	ऽ	ऽ
स	मं	स	स	सं	ध	रं	सं	न	ध
जू	ऽ		ल	ला	ऽ	ऽ	ट	ऽ	ऽ

न	ध	प	प	ध	मं	प	म	ग	र
ऽ	श	शि	ऽ	सो	ऽ	ऽ	है	ऽ	ऽ
म	म	ग	ग	ग	मं	प	मं	प	प
श्रौ	ऽ	र	ऽ	म	ग	न	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	मं	प	म	ग	म	र	र	स
र	रि	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न

मंचारी

+		०		२		३		०	
प	प	प	प	मं	प	ध	प	मं	प
नी	ऽ	ल	कं	ऽ	ठ	उ	र	गं	ऽ
म	म	ग	र	म	ग	ग	ग	र	स
प	क	पा	ऽ	ऽ	ल	मा	ऽ	ला	ऽ
न	स	ग	ग	ग	र	म	म	ग	ग
वि	भू	ति	ऽ	भू	ऽ	ऽ	ऽ	ग	न
ध	प	मं	प	म	ग	म	र	र	स
ग	र	ऽ	ल	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न

आभोग

+		०		२		३		०	
म॑	प	न	ध	न	स	सं	न-	सं	स
गौ	ऽ	री	ऽ	अ	र	ध	ऽ	ऽ	ग
न	स	गं	र	मं	ग	मं	रं	न	स
ड	म	रू	ऽ	क	र	पि	ना	ऽ	क
न	ध	न	स	न	ध	न	ध	म॑	प
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि
ध	ध	प	प	म	म	ग	ग	र	म
ध	न	ध	न	ध	न	म	त्ता	ऽ	दे
ग	ग	स	स	मं	सं	सं	सं	म	म
ऽ	व	गु	ण	सा	ऽ	ग	र	आ	ऽ
ग	ग	ग	र	म	ग	प	म॑	प	प
ग	र	गा	ऽ	व	त	ता	ऽ	ऽ	न
ध	म॑	प	ग	म	र	म	ग	र	म
मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ध	न्या	ऽ	न

राग–गौडसारंग।

चौताला

गायो न गोपाल मन लाय के निवार लाज,
पायो न प्रसाद साधु मंडली में जाय के।
धायो न धमकि वृन्दा विपिन के कुंजन में,
रह्यो न शरण जाय वीठ लेश राय के।
नाथ जू न देखि छक्यो छिन हूँ छबीली छवि,
सिंह पौरि परसा नहिं शीश हूँ नवाय के।
कहे हरिदास तोहि लाजहू न आवे नेक,
जनम गंवायो न कमायो कछु आय के॥

—हरिदास।

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
ग		र				म					
न	–	ऩ	स	–	म	ग	र	म	ग	–	ग
गा	ऽ	यो	न	ऽ	गो	पा	ऽ	ल	म	ऽ	न
ग	–	प	मं	–	प	म	ग	र	म	ग	ग
ला	ऽ	य	के	ऽ	नि	वा	ऽ	र	ला	ऽ	ज
प	–	प	न	ध	न	म	–	र	म	–	म
पा	ऽ	यो	न	ऽ	प्र	सा	ऽ	द	सा	ऽ	धु
न	म	ध	मं	प	म	ग	र	म	ग	–	–
मं	ऽ	ड	ली	ऽ	में	जा	ऽ	य	के	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
मं	प	प	स	–	सं	स	न	र	स	–	स
धा	ऽ	यो	न	ऽ	ध	म	ऽ	कि	दृ	ऽ	न्दा
स	ध	–	न	सं	रं	सं	न	ध	प	मं	प
वि	पि	ऽ	न	ऽ	के	कुं	ऽ	ज	न	मे	ऽ
न	स	स	गं	रं	म	गं	ग	–	मं	र	स
र	थो	ऽ	न	ऽ	श	र	ण	ऽ	जा	ऽ	य
न	स	ध	मं	प	म	ग	र	म	ग	–	–
वी	ऽ	ठ	ले	ऽ	श	रा	ऽ	य	के	ऽ	ऽ

संचारी

+		०		२		०		३		४	
प	–	प	मं	ध	प	म	ग	र	म	ग	–
ना	ऽ	ध	जू	ऽ	न	दे	ऽ	खि	छ	न्यो	ऽ
म	ग	प	म	र	स	न	म	ग	र	म	ग
छि	न	ऽ	ह	ऽ	छ	षी	ऽ	ली	ऽ	छ	यि

प	मं	ध	प	न	ध	स	न	ध	प	मं	न
सीं	ऽ	[illegible]	दौ	ऽ	रि	प	रयो	ऽ	ऽ	न	हिं
र	मं	ग	रं	स	न	ध	प	मं	प	म	ग
शी	ऽ	श	[illegible]	ऽ	न	वा	ऽ	य	के	ऽ	ऽ

आभोग

+		०		२		०		३		४	
प	प	–	प	स	म	स	–	रं	स	–	सं
क	है	ऽ	[illegible]	ऽ	रि	दा	ऽ	स	तो	ऽ	हि
न	स	सं	गं	र	मं	ग	–	र	म	न	सं
ला	ऽ	ज	हूँ	ऽ	न	आ	ऽ	वे	ने	ऽ	क
न	ध	न	ध	मं	प	ध	ध	प	म	ग	म
ज	न	ऽ	म	ऽ	ग	था	ऽ	ग	न	ऽ	क
प	मं	प	ग	म	र	म	ग	र	म	ग	–
मा	ऽ	गों	ऽ	क	छु	आ	ऽ	ध	के	ऽ	ऽ

राग–गौडसारंग ।

धमार

शुद्ध घडी शुभ दिवस मुहूरत शोधि लगन पंडित जन धर रे ।
देश देश के भूपति आय एक सो एक महा छवि धर रे ॥
ध्वज पताक तोरण वितान शुभ मंगल कलश सज्यों घर घर रे ।
वाणी वेद विविध उचरत बरसत घन मानो आनन्द झर रे ॥
नव दम्पति की अनुपम जोडी सुर अरु मुनि हूँ के मन हर रे ।
जो देखत निज भाग्य सराहत धन्य धन्य देख्यो दृग भर रे ॥
भृगु विधि सों सब लोग लुगाई चहत पसारे कर आदर रे ।
युग युग जीवें जनक नन्दिनी सुख सम्पति युत निज प्रियवर रे ॥

—भृगुनाथ

स्थायी

+					२					३			
स	–	–	ऩ	–	स	–	ग	र	म	ग	–	ग	–
शु	ऽ	ऽ	द्द	ऽ	घ	ऽ	ड़ि	ऽ	ऽ	शु	ऽ	भ	ऽ
ग	प	–	मं	–	प	–	ध	मं	प	र	म	ग	–
दि	व	ऽ	स	ऽ	मु	ऽ	हू	ऽ	ऽ	र	ऽ	त	ऽ
मं	प	–	न	ध	न	–	स	न	–	प	मं	प	–
शो	ऽ	ऽ	धि	ऽ	ल	ऽ	ग	न	ऽ	प	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	–	प	मं	ध	प	म	ग	–	र	म	ग	–
डि	त	ऽ	ज	ऽ	न	ऽ	ध	र	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+					२					३			
प	मं	प	सं	–	मं	–	–	न	र	स	–	–	–
दे	ऽ	ऽ	श	ऽ	दे	ऽ	ऽ	श	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ
मं	ध	–	रं	–	सं	रं	स	न	सं	ध	प	मं	प
भू	ऽ	ऽ	प	ऽ	ति	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ
सं	न	मं	ग	रं	म	ग	म	र	–	मं	रं	म	–
प	ऽ	ऽ	क	ऽ	सो	ऽ	ग	ऽ	ऽ	क	ऽ	म	ऽ
प	मं	प	मं	न	ध	प	म	ग	म	र	म	ग	–
हा	ऽ	ऽ	छ	ऽ	पि	ऽ	ध	र	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ

नोट—शेष पद अन्तरानुसार।

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

अष्टम किरण

राग–हिन्डोल ।

ध्यान

नितम्बिनो मन्दतरङ्गितासु दोलासुखेला सुखमादधान ।
स्मर्व कपोतद्युतिकाम युक्त हिन्डोलराग कथितो मुनीन्द्रै ॥

—संगीत दर्पणम् ।

लक्षण

रिपहीन सर्वतीयो धग सम्वाद शोभन ।
हिन्डोल औडुवो नित्यं प्रभाते गीयते बुधै ॥

—राग चन्द्रिकायाम् ।

राग-हिन्डोल-चौताला।

लक्षण गीत

मानन सब जन हिन्डोल राग मधुर औडव सुर।
वादी धैवत सुर कर समवादी गधार विचर,
गरजत रिप प्रथम प्रहर सोहत नित सरस मधुर॥

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
सं	–	स	ध	मं	ग	न	ध	मं	ग	–	स
गा	ऽ	न	त	स	ब	ज	न	हि	न्डो	ऽ	ल
स	–	स	ध	स	स	स	ग	मं	ग	स	स
रा	ऽ	ग	म	धु	र	औ	ऽ	ड़	व	सु	र
स	स	ग	ग	मं	ग	म	ध	म	ध	सं	–
स	न	ध	मं	ग	न	ध	मं	ग	ग	स	–

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
ग	–	म	ध	म	ध	सं	सं	सं	सं	सं	मं
वा	ऽ	दी	ऽ	धै	ऽ	व	त	सु	र	क	र

अन्तरा

+	२	०	३
ग ग मं ध	सं – मं –	स ग ग मं	ग – म म
स ख स खि	यॉ ऽ हि ऽ	न्डो ऽ ल झु	ला ऽ व त
मं – गं म	गं ग स सध	मं ध सं ध	मं ग – स
गा ऽ व त	ह रि गु ण	ह र प भ	रे भा ऽ रि

राग–हिन्डोल ।

त्रिताला

ग्रह वाक्पत उपज्या स ग मं ध न हिन्डोल दिन यमन्त पहले औडव राग ॥

स्थायी

+	२	०	३
		स	– ग स –
ध – स –	ग – मं ध	न ध ग –	मं ध म –
न ध मं ग	न ध ग –	मं ग –	

अन्तरा

+	०	२	३
		मं –	ध म – म
		ग्र ऽ	ण वा ऽ ग्य

स्थायी

+	२	०	३
	मं ग स –	स ग ग –	धम ध न ध
	जा ऽ को ऽ	ब्र ऽ ह्मा ऽ	अ ऽ न्त न
सं – न ध	मं म –	ग – ग –	धम ध न ध
पा ऽ वैं ऽ	जा ऽ को ऽ	ता ऽ को ऽ	न ऽ न्द कि
म – न ध	मं ध सं –	ग ग मं ग	मं ध न ध
ना ऽ रि य	शो ऽ दा ऽ	घ र की ऽ	ट ह ल क
म – न ध			
रा ऽ वैं ऽ			

अन्तरा

+	२	०	३
		ग – ग ग	मं ध मं ध
		शे ऽ ष स	ह स ना ऽ
म म सं सं	– न सं सं	स – ग –	सं सं न ध
र द ग णे	ऽ ग मु नि	जा ऽ को ऽ	गु ण ति न

स्थायी

+	२	०	३
	स ग मं ध	स न ध न	मं ध स न
	अ च के ऽ	रा ऽ खि ले	ऽ हु भ ग
ध मं ग ग	स ग मं ध	ग ग ग मं	– ध मं ध
वा ऽ ऽ न	अ च के ऽ	र म अ ना	ऽ ध चै ऽ
सं – न ध	न ध मं ग	स ग ग ग	धमं ध सं न
ठे ऽ द्रु म	ड रि या ऽ	पा ऽ र धि	सा ऽ धे ऽ
ध मं ग ग			
धा ऽ ऽ न			

अन्तरा

+	२	०	३
		ग – ग –	मं ध मं ध
		जा ऽ के ऽ	ह र भा ऽ
सं – सं –	स ध मं –	न सं गं गं	सं न ध न
ज्यो ऽ चा ऽ	र त है ऽ	ऊ ऽ प र	दु पयो ऽ म

स	ध़	स	–	स	ग	म॑	ध	न	ग
ना	ऽ	ऽ	ऽ	द	मू	ऽ	ल	ते	ऽ
ग	म॑	ध	सं	मं	–	न	ध	म॑	ग
उ	प	जे	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल
न	ध	ग	–	म॑	ग	–	स	–	स
च	ऽ	न्धा	ऽ	न	सौं	ऽ	गा	ऽ	वे
ग	स	न	स	न	ध़	म॑	ध	ऩ	स
जो	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ
ऩ	स	स	ग	म॑	ग	म			
मो	ऽ	स	म	प	रे	ऽ			

अन्तरा

+		२			०		३		
ग	म॑	ध	म॑	ध	सं	स	स	–	म
म	स	छु	ऽ	र	ती	न	आ	ऽ	य
ग	म॑	ध	मं	स	न	म	ध	न	म
इ	क	इ	ऽ	म	मु	ऽ	छै	ऽ	ना

आभोग

+				०			३		
ग	म॑	ध	म॑	ध	स	–	सं	सं	–
क	है	वै	ऽ	जू	वा	ऽ	ब	रे	ऽ
सं	न	ध	न	ध	म॑	न	ध	म॑	ग
सू	नो	हो	ऽ	गो	पा	ल	ला	ऽ	ल
म॑	न	ध	–	मं	स	–	सं	सं	स
ध	ह	धि	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	अ	प	र
गं	–	म	मं	गं	स	ग	स	न	ध
म्पा	ऽ	र	गु	न	च	र	चा	ऽ	ऽ
ग	म॑	ध	ग	म॑	ग	स	स	ग	स
ऽ	ऽ	मो	ऽ	ल	के	ऽ	प्र	थ	म

अन्तरा

+		२			०		३		
म॑	ध	सं	सं	सं	न	स	सं	स	सं
अ	ऽ	ग	ऽ	वि	भु	ति	ला	ऽ	य
स	सं	न	न	ध	न	ध	म॑	ग	ग
वि	ज	या	ऽ	ध	तु	र	खा	ऽ	य
ग	ग	म॑	ग	ग	म॑	ध	सं	स	सं
क	र	त	ऽ	र	र	त	नि	ऽ	त्य
स	न	न	ध	न	ध	म॑	ग	म॑	ग
त	न	म	द	न	ज्वा	ऽ	ला	ऽ	ऽ

सचारी

+		२			०		३		
स	म	ग	ग	ग	म॑	ध	सं	सं	सं
हा	ऽ	धे	ऽ	ड	म	रु	लि	ऽ	ये
स	मं	न	–	ध	न	ध	म॑	ग	ग
ओ	ऽ	दे	ऽ	धा	घ	ऽ	म्य	ऽ	र

ग	मं	न	ध	मं	ग	मं	ग	म	म
शी	ऽ	श	ऽ	मों	हे	ऽ	धा	ऽ	के
म	म	न	—	ध	न	ध	मं	ग	ग
न	य	ना	ऽ	वि	शा	ऽ	ला	ऽ	ऽ

आभोग

+		२			०		३		
मं	ध	स	म	म	सं	न	सं	म	ग
क	र	त	ऽ	सु	जा	ऽ	न	ऽ	गों
मं	म	ग	ग	मं	गं	म	गंम	म	ग
जि	या	मे	ऽ	म	सु	क	दे	ऽ	न
ग	ग	मं	ग	ग	मं	ध	स	म	म
मे	ऽ	रे	ऽ	नि	ग	र	धा	ऽ	न
म	म	न	न	ध	न	ध	मं	ग	ग
है	ऽ	पै	ऽ	ल	पा	ऽ	धा	ऽ	ऽ

राग–हिन्डोल।

ख्याल

नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी, राधा मोहन खेलत होरी।
श्री वृन्दावन अतिहि उजागर वरन वरन नव दम्पति भोरी॥
एकन कर है अगर कुमकुमा एकन कर केसरि ले घोरी।
एक अर्थ सौं भाव दिखावति नाचत तरुन बाल वृध भोरी॥
श्यामा उतहि सकल व्रजवनिता इतहि श्याम रस रूप लहोरी।
कंचन को पिचकारी छुटति छिरकत ज्यौं सचुपावे गोरी॥
अतिहि ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहो न करारी।
करत दुहाई नन्दराय की लै जु गयो कलवल छल जोरी॥
झून्डन जोरि रही चन्द्रावलि गोकुल में कछु खेल मच्योरी।
सूरदास प्रभु फगुवा दीजे चिरजीवो राधा वर जोरी॥

—सूरदास।

स्थायी

+		०		२		३		०	
म	–	ध	ध	स	सं	न	ध	–	–
न	ऽ	न्द	न	न्द	न	वृ	ष	ऽ	ऽ
म	ग	म	ध	ग	म	ग	स	म	–
भा	ऽ	नु	कि	शो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
स	–	ग	–	म	ध	न	ध	म	–
रा	ऽ	धा	ऽ	मो	ऽ	ह	न	ऽ	ऽ

म	गं	म	न	ध	मं	ग	मं	ग	म
गे	ऽ	ल	म	गे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

+		॰		२		३		०	
ग	—	मं	ध	सं	—	—	म	—	म
श्री	ऽ	वृ	ऽ	न्दा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न
मं	ध	मं	ध	सं	न	ध	मं	ग	ग
अ	ति	हि	त	जा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र
म	गं	गं	मं	गं	सं	न	ध	म	म
घ	र	न	ऽ	ऽ	प	र	म	न	ग
न	ध	मं	ग	न	ध	मं	ग	म	म
ह	ऽ	म्प	ति	जो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

राग–हिन्डोल।

चौताला

सुध विधि ग्रनि आवे पै मातु जापर–
तूँ कृपा कर आनन्दी आनन्द मंगल।
सुर नर मुनि गुनी गधर्व गावत–
ते पावत सुख असुर दलिन का संघारति दल॥
सिंह वाहिनी कर त्रिशूल खड्ग खप्पर–
गले मुंड माल साहत महि डगमगात डरे खलभल।
ब्रह्मादिक अस्तुति करत जोरि करत विन्ध्याचलि–
धन्य धन्य देत कालि चारो फल॥

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
						स	मं	ग	म	ग	मं
						म	ध	वि	धि	ध	नि
ध	–	सम	ध	मं	मं	म	संध	न	धम	ध	म
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ग	ऽ	मा	ऽ	तु
ग	–	म	मं	मं	मं	मध	मं	ग	ग	म	म
जा	ऽ	ऽ	प	र	तूँ	कृ	पा	ऽ	क	ऽ	र

संचारी

+		०		२		०		३		४	
स	ध	ध	ध	–	ध	ध	–	–	धम	ध	स
सि	ऽ	द्द	धा	ऽ	द्धि	नी	ऽ	ऽ	क	र	त्रि
सं	–	मं	स	–	सं	मं	ऽ	मं	ध	मं	ग
शु	ऽ	ल	ख	ऽ	ड्ग	ख	ऽ	प्प	र	ग	ले
ग	स	स	म	–	स	स	–	म	स	म	स
मु	ऽ	न्ड	मा	ऽ	ल	सो	ऽ	ह	त	म	हि
म	ग	मं	मं	–	मं	म	मं	मं	ध	मं	ग
ड	ग	म	गा	ऽ	त	ड	रे	व	ल	भ	ल

आभोग

+		०		२		०		३		४	
धमं	ध	सं	–	म	म	म	म	म	म	म	म
ब्र	ऽ	ह्मा	ऽ	दि	क	अ	स्तु	ति	क	र	न
धमं	ध	सं	म	म	म	मं	ग	सध	म	म	म
जो	ऽ	रि	क	र	त	यि	ऽ	न्या	ऽ	न	लि

म ग – मं ध | ग मं ग म – | नृ – स स
हो ऽ ऽ री ऽ | रं ग हो ऽ ऽ | रो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

\+ २ ३

म ध – सं – स – स – – | सं – मं –
आ ऽ ऽ य ऽ अ ऽ चा ऽ ऽ | न ऽ क ऽ

म सं ग स – मं – न ध – | म ध सं –
भु ज ऽ भ ऽ री ऽ प क ऽ | री ऽ ऽ ऽ

म गं – ग – गं मं गं म – | स – म –
ग रि ऽ ध ऽ रिँ ऽ यों ऽ ऽ | जो ऽ म ऽ

न ध – म ग मं न ध म ग | म ग स म
रो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ री ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

श्री सरस्वत्यै नमः

शिव संगीत प्रकाश

प्रथम भाग

प्रथम किरण

सुगम तान

राग—यमन-कल्याण, त्रिताल ।

(१)

+				२				०				३			
नरे	गमं	धन	नध	पमं	गमं	गरे	सस								

(२)

+				२				०				३			
गमं	धन	नंरे	संन	धप	पग	मंग	रस								

द्वितिय किरण

सुगम तान

राग–भूपाली त्रिताल ।

(१)

\+ २ ० ३

सर गप धस सध । पग धप गर सस

(२)

\+ २ ० ३

सर गप धस रसं । धप गप गर सस

(३)

\+ २ ० ३

सर गग रग सर । सर सध पध सस

(४)

\+ २ ० ३

सर गप पग रस । सर गप धप गर । संस धप गर सस

(५)

\+ २ ० ३

सस रर संसं धप धसं धप गर सस

(६)
(७)
(८)
(९)
(१०)

तृतीय किरण

सुगम तान

राग—हमीर, एकताल।

(१)

+	०	२	०	३	०
गम धप	मर गम	रम नम			

(२)

+	०	२	०	३	०
सं सं धर	मंप गम	रम गम			

(३)

+	०	२	०	३	०
गम धध	मंप गप	धन संन	धर मंप	गम धन	सर मन
धर गम	गग मर	गम रम			

चतुर्थ किरण

सुगम तान

राग—केदारा, त्रिताल ।

(१)

+	२	०	३
सस मम पप धप	मम पप मम रस		

(२)

+	२	०	३
	सस मम पप धन	धप मंप संसं धप	मम पप मम रस

(३)

+	२	०	३
मम पप धप संर	संसं धप मम पप	धन धप मंप धप	मम पप मम रस

(४)

+	२	०	३
सस रग मम मम	पप धन धप मंप	धध पप मम धध	पप मम रम रस

संसं धध पपसंस | धध पप मम रस | सस सम मम रर | रप पप धध पप

मंमं मंम मंम संसं | धध पप मम रस |

पंचम किरण

सुगम तान

राग—कामोद त्रिताल ।

(१)

+   २   ०   ३

| | | मर पप धध मंप | गम पप मम रस

(२)

+   २   ०   ३

| मर पप धध मंप | संस रर सर्स धप | मंप धप मम रस

(३)

+   २   ०   ३

मम रस नस | पपधध मंप धध | मंप नसं रर नसं | सध पग मम रस

षष्ठ किरण

सुगम तान

राग—छायानट, त्रिताल।

(१)

+	२	०	३
रग धप रग मध	पम गम रस नस		

(२)

+	२	०	३
रग मध पध नध	सन धप मग रस		

(३)

+	२	०	३
रग मध पध नध	सन धप र्रर् सन	धप मंप गम रस	

(४)

+	२	०	३
रग मप मग मर	पप मग मर सन	धप रर गर गम	धप गम रर मम

सप्तम किरण

सुगम तान

राग–गौडसारंग, त्रिताल ।

(१)

+	२	०	३
		नस गर मग पमं	धप मग मर मम

(२)

+	२	०	३
	नम गर मग मग	पमं धप नध सन	धप मग मर मम

(३)

+	२	०	३
मग गर मग गप	पमं धमं पग मग	मर मग गम रम	सन धप मर मम

(४)

+	२	०	३
गम मग पप पध	धप मर्स सरं सन	गम मध पप मस	धप धप पमं धमं
पप मग पमं धप	मग मर मर नम		

अष्टम किरण

सुगम तान

राग—हिन्डोल त्रिताल।

(१)

+	२	०	३
		संस धसं मंध सन	धमं गमं गग सस

(२)

+	२	०	३
	सग गस गमं धमं	सन धमं गमं धन	मंध सन धमं गस

(३)

+	२	०	३
सग गस गमं धसं	गंगं सन धन मंध	ससं धस नध नमं	स धमं गग सस

(४)

+	२	०	३
सम गग मंमं गग	सस गग मंध संस	गग मंमं धध मंमं	गग मंमं गग सस

अष्टम किरण

सुगम तान

राग–हिन्डोल त्रिताल।

(१)

+	२	०	३
		संसं धसं मंध सन	धमं गमं गग सस

(२)

+	२	०	३
	सग गस गमं धमं	संन धमं गमं धन	मंध सन धमं गस

(३)

+	२	०	३
सग गस गमं धसं	गंगं सन धन मंध	ससं धस नध नमं	स धमं गग सस

(४)

+	२	०	३
सम गग मंमं गग	सस गग मंध संस	गग मंमं धध मंमं	गग मंमं गग सम